भगवत् कृपा

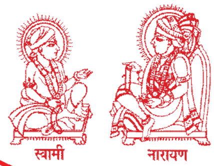

साकार प्रगट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम को पाये

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

वर्ष 26 अंक : 1	15.1.2003 बुधवार (जनवरी-फरवरी)	वार्षिक चंदा : 50.00

आइए.....

हमारे पवई - मुंबई के 'अक्षरधाम' नवनिर्मित मंदिर की मूर्तिप्रतिष्ठा में—

हमारा परम सौभाग्य है कि प.पू. काकाजी महाराज के साक्षात्कार की स्वर्णजयंती
हमें हमारे जीवनकाल दौरान मनाने का सुअवसर मिला
और...
अब केवल गुणातीत समाज के ही नहीं,
बल्कि 'श्री अक्षरपुरुषोत्तम' के कई मंदिरों एवं केन्द्रों के निर्माण व विकास में
खुद याहोम होने वाले प.पू. काकाजी महाराज ने
पवई में जो 'आंतरराष्ट्रीय आध्यात्मिक संशोधन केन्द्र' बनाने का संकल्प किया था,
वह साकार होने जा रहा है।
तो आइए,
प्रत्यक्ष गुणातीत स्वरूपों प.पू. पप्पाजी, प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी,
प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी, प.पू. जशभाई साहेब, प.पू. हरिभाई साहेब एवं
प.पू. गुरुजी, प.पू. दिनकरभाई, प.पू. कोठारीस्वामिजी, प.पू. निर्मलस्वामिजी की निश्रा में
*दि. **2.2.2003** के यज्ञ एवं **3.2.2003** को होने वाली मूर्तिप्रतिष्ठा में*
आप सपरिवार-मित्रमंडल सहित निमंत्रित हैं।
प.पू. काकाजी महाराज के प्रति अपनी भक्ति अदा करके
स्वयं को धन्य करने की यह स्वर्ण पल गवाएं नहीं !

१९५२-२००२
50
साक्षात्कार स्वर्णजयंती

3 फरवरी......गुणातीत समाज के प्राणपुरूष का साक्षात्कार दिन

3 फरवरी 1952– प.पू. काकाजी को हुए 'साक्षात्कार' की परम महामंगलकारी ऐतिहासिक क्षण... समग्र गुणातीत समाज की स्वर्ण स्मृति का पल... जब गुरुहरि योगीजी महाराज ने गुणातीत परंपरा की बागडोर अक्षरधाम से ही साथ में लाए अपने पनौते पुत्र– प.पू. काकाजी के हाथों सौंपी और उसी पल से इस दिव्य विभूति ने अर्थात् प.पू. काकाजी ने 'स्वामिनारायण' के संबंध वालों का दास बन कर उनका ही कार्य करने अपने खून का एक-एक कतरा समर्पित करने का संकल्प तो किया ही, इससे भी अधिक– **'यह अनिर्वचनीय सुख संबंध में आए सभी को मुझे बांटना है'–** ऐसा दृढ़ संकल्प भी उन्होंने एक अनोखी-विशाल उदात्त कल्याण भावना से भूमंडल में मानो फैंका.... **आज उसी संकल्प के फलस्वरूप ही जाने-अनजाने संबंध में आए हम सभी धन्य हुए और दिव्य जीवन की राह पर अग्रसर हुए हैं।**

प.पू. काकाजी ने गुरुहरि योगीजी महाराज द्वारा सौंपी गई दिव्य मशाल की ज्योति को निरंतर जलती रख कर अनेक चेतनाओं को दिव्य प्रकाश में ओत-प्रोत करके दिव्यता के मार्ग पर अग्रसर किए... धन्य-धन्य– सिर्फ एक योगी को प्रसन्न करने की ही वासना-तमन्ना रखने वाले व भक्तों के वश वर्तते विरल महायोगी की अजोड़ गुरुभक्ति को !

निरपेक्ष सेवा व पराभक्ति का परम स्वरूप यानि प.पू. काकाजी ने जो भी उनके संबंध में आया उसे योगी का ही रंग लगा दिया, क्योंकि सभी के होते हुए भी उनकी हर सांस 'योगी' से ही भरी हुई थी। गुरुहरि योगीजी महाराज को केन्द्र में रखते हुए वे सभी में रसबस हुए, सब के हृदय में प्रगट प्रभु की मूर्ति पधरा दी ! उनकी संत अवस्था-गुणातीत अवस्था अजोड़ थी। श्रीजी के अखंड धारक स्वरूप प.पू. काकाजी आधी रात को भक्तों की भक्ति करनी हो– पराभक्ति करनी हो तो –'अनुरागी' ! गुणातीत समाज के मुमुक्षुओं को सच्ची माहात्म्ययुक्त सेवा व भक्ति के अमृत से सींचा। स्थूल शरीर छोड़ने के सत्रह साल बाद भी वे आज योगी चैतन्यों के पथ प्रर्दशक बन कर कईयों को अनेक प्रकार की प्रतीति करा कर चेतना की प्रगति करा रहे हैं....

प.पू. काकाजी के अत्यंत प्रभावशाली व्यक्तित्व, उनकी निराली छवि के बारे **अब तक हमने अपने चर्म चक्षुओं व मायिक बुद्धि से खूब पढ़ा– सुना, दूसरों को भी महिमा गा-गा कर बताया... वह हमारी भक्ति जरूर है, पर प.पू. काकाजी के अंतर की प्रसन्नता हम पर ढले, उसके लिए सारी कॉरोलरीझ अलग ही हैं।** जैसे कि श्रीजी महाराज ने सद्. प्रेमानंदस्वामी पर बहुत प्रसन्न होकर जब अपना प्रसादी का हार दिया, तब सद्. प्रेमानंदस्वामी ने मांगा कि हे महाराज ! आपकी मूर्ति अखंड रहे ऐसे आशीर्वाद दीजिए.... प्रत्युत्तर में श्रीजी महाराज बोले थे कि उसके साधन तो अलग हैं। तो, **आज हम अपने भीतर अंतर्दृष्टि करके ढूंढें कि हम स्वयं प.पू. काकाजी के सिद्धांतों पर इन 17 सालों में कितना जीए ?** वे जिस कक्षा पर हमें ले जाना चाहते थे, हमारे जिस वर्तन से उनको 'ठंडक' हो– क्या हम ऐसा जीतें हैं ? आईए, 1981 में लिखे निम्न पत्र से उनके अंतर के हार्द-रहस्य को अब तो पकड़ कर नए वर्ष में नई शुरुआत करें....

स्वामिश्रीजी

19.1.81

..........3 फरवरी का प्रगट प्रभु का आदेश :-

आप सभी कुशल होंगे। वहां के कई हरिभक्तों ने यहां उभराट एवं विद्यानगर की शिविर में हाज़िर रह कर आनंद किया।
अब वे वहां आ रहे हैं– नई दृष्टि लेकर आ रहे हैं।
गुणातीत द्विशताब्दी के **उत्सव का प्रारंभ–**
सर्वदेशीय समझ से,
किसी भी प्रकार के भेदभाव के बिना,
प्रभु को - पू. बापा को और प्रत्यक्ष स्वरूपों को राजी करने के हेतु से ही होना चाहिए।
14 जनवरी को सूर्य अपनी दिशा बदलता है।
यूं तुम्हें सत्संग मिला है। तुम सूर्यरूप-ब्रह्मरूप हुए; हुए नहीं, हो ही !
तो अब जीवन का **दृष्टिबिंदु बिलकुल बदल कर** गुणातीत द्विशताब्दी **मनाने का दृढ़ संकल्प करना**
और
सुहृद्भाव से मिलजुल कर पू. बापा की दी हुई अक्षरधाम की मौज सभी लूटना।
इससे 'झंडा ऊँचा रहेगा हमारा'
और

सच्चे सेवक बन कर समग्र सत्संग की निर्दोषबुद्धि रूपी सेवा होती जाएगी।
सुहृद्भाव के ऐसे प्याऊ ठौर-ठौर और जगह-जगह पर बनाएं हैं।
उन्हें इस गुणातीत ज्ञान के रहस्य से भरसक भर देना।
उसके लिए–
अहोहोभाव से सद्भावना के ही पूर बहा कर,
हृदय में गुणातीतभावना दृढ़ करते जाओगे,
तो ब्राह्मीशक्ति काम करती लगेगी।
पू. बापा और प्रत्यक्ष स्वरूप पहले और बाद में हम !
तो अब यह नया मोड़ -
खुद को ब्रह्मस्वरूप मान कर जीने का-'योगीगीता' और 'सुनृत' के मुताबिक लेना।
इस तरीके की स्वरूपधारणा से स्वरूपयोग करते रह कर,
जैसे प्रभु प्रेरणा करें वैसे,
दो-पांच जने मिलकर सत्संग का विकास करते रहना।
श्री सहजानंदस्वामी पूर्ण रूप में मिले हैं– जीतेजी मिले हैं।
उस परम तत्त्व की - परब्रह्म की - प्रत्यक्ष की निष्ठा हुई।
सो–कर्ता, साकार, सर्वोपरि और प्रगट माने गए।
लेकिन इस **'रहस्य'** को–
रोज़मर्रा जीवन में–छोटे-बड़े प्रसंगों में भी
उस **'परम सत्ता की सचेतता'** सतत् बरतने के लिए
भगवदी का प्रसंग निरंतर करना ही पड़े
और
तभी उनकी (प्रत्यक्ष स्वरूपों की) महिमा यथार्थ समझ आएगी,
फिर जीवन में उतरेगी और तब ही संबंध वाले दिव्य माने जाएंगे।
यह केवल सच्चे प्रेम का मार्ग है।
तो, 3 फरवरी के साक्षात्कार दिन की भेंट सभी स्वीकारना।
यानि कि **हमारे यह उत्सव और मौज की बड़ी 'केक' आप खुद काट कर सभी को बांटना।**
आओ, आओ !
हम सभी बापा का ही परिवार हैं। एक ही सारा 'डिवाईन फेमिली' है।
सभी आत्मीय जनें-भाईयों, बहनें और गृहस्थ–
'योगी परिवार' रूप में इकट्ठे होकर उन परम पुराण पुरुषों का गुणगान गाएं।
यह सनातन युगल उपासना सिद्ध करके, ब्रह्मस्वरूप होकर परब्रह्म को हृदय में धार कर,
उनके अनंत गुण, शक्ति और प्रताप में हृदय की भावना से सराबोर होकर,
गुणातीत भावना में रह कर काम करते हुए,
हर जगह आनंदोत्सव करते रहना।
हमारी वृत्ति यानि कि हमारा रवैया बदलते ही हमारी दृष्टि बदलेगी
और
उससे सर्वत्र ब्रह्मसृष्टि ही दिखाई देगी
व
इसी जीवन में ही आगे-पीछे प्रभु की लीला दिखाई देगी।
ऐसा अक्षरधाम का दिव्य सुख–
मिलजुल कर, गुणगान गाते-गाते लेते जाएं यही अंतर की अभिप्सा है।
इस ब्रह्मनियंत्रित दिव्य समाज में फिर –
किसी के प्रति राग-द्वेष, मेरा-तेरा, मालिकी हकदावे नहीं होंगे,

किसी का भी अभाव अवगुण नहीं आएगा।
वच. प्र.-16 सिद्ध करके
आध्यात्मिक विनम्रता को **शुद्धभाव से** सभी कोई – जहां हों वहां **प्रगट करते जाओ**
यही पू. पप्पाजी, पू. स्वामिजी, पू. काकाजी, पू. साहेब और सभी साक्षात् स्वरूपों की तीव्र अभिप्सा है।
हम सभी बड़ों का वह परम सिद्धांतिक ब्रह्मसूत्र है।
तो, 3 फरवरी के **सत्य संकल्प की यह भेंट**
आप सभी की ओर से अंतर से 'स्वामिश्रीजी' को प्रार्थना करके अर्पण करते हैं,
जिससे कि आप उसके मुताबिक एकांतिक धर्म व्यापक बना कर जीते हो जाओ
यही फिर से गुरुचरणों में प्रभुचरणों में प्रार्थना है।
धन्यवाद, धन्यवाद, धन्यवाद... सभी को, सभी साधकों को, गुरुदेव को और प्रत्यक्ष चैतन्य स्वरूपों को।
यहां बापा की पुण्यतिथि से वसंतपंचमी - पू. शास्त्रीजी महाराज की जयंती तक
स्पेश्यिल भजन का कार्यक्रम रखा हुआ है।
तो आप भी लग पड़ना।
जीव में खूब बल आ जाएगा।

यही–
लि. **दादुकाका** के हेतपूर्वक जय स्वामिनारायण !'

प.पू. काकाजी की **साक्षात्कार स्वर्णजयंती** मनाई तभी सार्थक कही जाए कि जब हम जहां अटके हों, उससे आगे जाएं... अपनी गफलत, होशियारी-चालाकी, लुकाछिपी, भोलेपन, लापरवाही या स्वभाव की जड़ता के कारण अपना निशान चूक गए हों, वहां से अपना निशान पा लेने– किसी का भी दोष नज़र में लिए बिना– ब्रह्मनियंत्रित सुहृद् समाज में आत्मबुद्धि व प्रीति की भावना रख कर ब्राह्मी कॉन्शियसनेस में रहते हो जाएं।

प.पू. काकाजी के इन सिद्धांतों-आदर्शों को पकड़ कर प्रगट ज्योतिर्धरों के सान्निध्य में **औपचारिक 'बौद्धिक भावना' छोड़ कर सर्वदेशीय 'भावात्मक बुद्धि' से सब** मिलजुल कर **एक-दूसरे के पूरक बन कर** काम करें और **समग्र गुणातीत समाज में** प.पू. काकाजी को खूब पसंद –**'सुहृद्‌भाव, निर्दोषभाव, दिव्यभाव, मैत्रीभाव' के पूर बहा कर** प.पू. काकाजी के परिश्रम को सफल करने प्रगट गुणातीत स्वरूपों हमें खूब-खूब बल दें– यही प्रार्थना !

✡✡✡

स्वर्णशिविर के पंडाल से– 'भोजनम् ज्ञानामृतम्'

[31 मार्च, 2002 सुबह]

पू. घनश्यामभाई

....एक बार काकाजी नापा आए थे। रमेशभाई सोनी ने (काकाजी की) मालिश-वालिश करी। फिर (वे) बाहर झूले पर बैठे थे। रमेशभाई को कहा कि तू जा अब, मैं नहा-धो कर निपट जाऊं। उनके आगे– झूले के आगे मैं बैठा था। थोड़ी देर हुई तो बोले– दर्शन, पानी ले आ। बैठा तो मैं था ! मुझे बोले कि दर्शन पानी ले आ। यूं चश्मा रखा था। मैं पानी लेकर आया। फिर वापिस झूला झूलाने लगे और फिर बोले– घनु पान बना कर ले आ। मैंने सोचा– यह क्या ? फिर पान लेकर आया। थोड़ी देर– पाँच एक मिनिट–दस एक मिनिट हुई तो बोले घनिया पानी ले आओ। मुझे ख्याल पड़ा नहीं। फिर थोडी देर बाद बोले– सेठ अब बहुत टाईम हो गया, अब खाना खा लें। फिर खाना खाने के बाद पांव वगैरह दबाने थे, तो बोले कि चल घनु पांव दबा दे अब। पांव वगैरह दबा कर रमेशभाई और मैं सो गए। चार बजे उठे तो फिर दोबारा कहा– दर्शन पानी ले आओ। तब रमेशभाई से रहा नहीं गया, तो रमेशभाई ने पूछा कि इसे क्यों घनियो, सेठ, दर्शन ? तो बोले कि इसे दर्शन होना है। दर्शन हो जाए तो कोई प्रॉब्लम नहीं रहे। दर्शन जैसे कांतिकाका के पेट पर कूदा करता है, वैसे ये कूदेगा तो सब कुछ हो जाएगा। यानि दर्शन हो जाए, मतलब कि 'भुलका' बनाना होगा। तो अभी प्रार्थना है कि हो जाऊं...

पू. भरतभाई

...पू. गुरुजी ने, पू. दिनकरभाई ने, निर्मलस्वामी ने, कोठारीस्वामी ने, कल स्वामिजी ने भी आशिष की वर्षा करी और काकाजी के रहस्य को – काकाजी के साक्षात्कार दिन के रहस्य को बताया। पू. वशीभाई ने भी उनके बारे बहुत अच्छी तरह से हमें वो प्रसंग को समझाया। काकाजी के साक्षात्कार दिन की स्वर्णजयंती का अवसर हम ये पूरा साल मना रहे हैं। बहुत जगह पर ऐसे फंक्शन्स होते रहेंगे और हम ऐसी भावना भी रखते हैं कि ये साक्षात्कार दिन के उपलक्ष्य में जहां-जहां काकाजी केऐसे फंक्शन हों, वहां हम जाएं। सभी की ऐसी भावना रहती है। काकाजी के प्रसंग में कुछ अल्प समय के लिए या तो कुछ ही क्षण के लिए भी जो-जो भक्त आए होंगे - इधर जो भी बैठे हैं, उनके हृदय में भी काकाजी की कोई विशिष्ट रूप से अनुभूति, अनुभव हुआ होगा।

साक्षात्कार का ये अवसर गुरुजी ने तीन दिन का रखा, 29-30-31। जब हम सब बम्बई से आ रहे थे, तो ट्रेन में सभी गोष्ठि कर रहे थे। सभी की प्रार्थना ऐसी रही कि वो 72 घंटे का साक्षात्कार और ये फंक्शन भी 72 घंटे– तीन दिन का रखा हुआ है। तो हम ये तीनों दिन साक्षात्कार में रहें, उनकी स्मृति में रहें और गुरुजी ने भी यहां ऐसा प्रदर्शन और काकाजी की स्मृति से पूरा माहौल भर दिया है। तो सहज ही ऐसी स्मृतियाँ अखंड रहती हैं।

जब प्रदर्शन देख रहे थे, तो काकाजी की एक मूर्ति के नीचे लिखा हुआ है कि– **'अभी मेरे चश्मे से तुम देखना सीखो, हमारी दृष्टि से देखना सीखो।'** तब मुझे एक प्रसंग याद आता है। सहृदयी में वो प्रसंग दासस्वामी ने लिखा हुआ है। हमारी दृष्टि बहुत ही सीमित है और उनकी दृष्टि कुछ अलग ही है। कल भी **गुरुजी ने भी बताया** था कि **गुणातीत पुरुषों की योनि ही हम से अलग है। जितना जानवर और मनुष्य में फर्क है, उतना फर्क ये गुणातीत पुरुषों और हम में है।** उनकी दृष्टि से देखने के लिए बहुत ही साल चले जाते हैं। ऐसी उनकी दृष्टि है। कल कोठारीस्वामी ने भी बहुत अच्छी तरह से वो सब समझाया कि साक्षात्कार मीन्स क्या ? और हम कहां जीते हैं ! तो आज ऐसी प्रार्थना करने का दिन है।

गुरुदेव रविन्द्रनाथ टॉगोर जब छोटे थे, तो उनकी दृष्टि शॉर्ट थी। मीन्स वो नज़दीक का ही देख सकते थे, दूर का नहीं देख सकते थे। उनको तो ऐसा ही लगता था कि मैं जितना देखता हूँ, उतना ही सब लोग देख रहे हैं। जब वो खेल रहे थे, तो साथ में एक छोटा लड़का था उसने चश्मा पहना था। उन्हें एकदम कौतुक लगा कि ये क्या चीज़ है। खेलते-खेलते उन्होंने उसके चश्मे ले लिए और अपनी आँख पर लगा दिए। जब अपनी आँख पर लगाए, तो उनको बहुत दूर का दिखने लगा। तब उनको पता चला कि मेरी दृष्टि शोर्ट है। मुझे नज़दीक का ही दिखता है, दूर का नहीं दिखता है। लेकिन ये चश्मा लगाने से बहुत दूर का देखने का शुरू हो गया। इसलिए मेरी दृष्टि से ज्यादा दृष्टि वाले कोई हैं–ज्यादा दूर देखने वाले हो सकते हैं। **हमें गुणातीत पुरुष की ऐसी पहचान तो है, मगर वो पर्मनेन्ट नहीं रहती।** हम भूल जाते हैं कि ये गुणातीत पुरुष को तो कुछ अलग ही दिखता है और हम हमारे जैसे ही उनको मान लेते हैं।

एक बार हमारे यहां ये उन्नीकृष्णन साहेब आए थे। वो साऊथ इंडियन हैं और नायर हॉस्पीटल में काम करते थे, तो वो काकाजी के पास आते थे। यह बात मैं इसलिए कर रहा हूँ कि **काकाजी जो बोलते थे, काकाजी जो कहते थे, उसे समझने के लिए बहुत ही टाईम चला जाता है।** वो काकाजी के पास आते थे, काकाजी उनको कुर्सी पर बिठाते थे और कुर्सी पर बिठा कर एक बार ऐसे ही बातें कर रहे थे। तब काकाजी ने बोला कि आप हर रोज ऐसी स्वामिनारायण की धून करना। तभी उनके साथ सब साऊथ इंडियन ग्रुप रहता था। तो उसने सोचा कि मैं उधर ऐसी धून करूँगा और जो मेरे साथ रहते हैं वे 'स्वामिनारायण' को मानने वाले हैं नहीं, सो मुझे रूम से निकाल देंगे और भगा देंगे। किधर धून करूँ ? ऐसा सिर्फ विचार आ रहा था, तो काकाजी बोलते हैं कि आप बाथरूम में तो जाते हो कि नहीं ? ऐसा इमीजिएट बोले तो उसको लगा कि काकाजी ने मेरा ये विचार पकड़ लिया। फिर दूसरी बार आए तो उसको लगा कि काकाजी में अलग ही भाव है। तब काकाजी बोलते हैं– सुंदरम् ! आपका नाम क्या ? सुंदरम्। तो वो बोलते हैं– नहीं काकाजी, मेरा नाम उन्नीकृष्णन्। फिर बैठते हैं, थोड़ी बात चलती है–तो फिर काकाजी बोलते हैं– 'सुंदरम्'। तो वो काकाजी को दोबारा बोलते हैं कि काकाजी मेरा नाम 'सुंदरम्' नहीं–उन्नीकृष्णन्। काकाजी सुन लेते हैं। फिर थोड़ी बातें चलती हैं और फिर काकाजी उनको कहते हैं–'सुंदरम्'। तो फिर वो बोलते हैं कि काकाजी मेरा नाम उन्नीकृष्णन् है, सुंदरम् नहीं है। काकाजी एकदम जोर से उसको बोलते हैं– मैं आपको सुंदरम् कहूँ, उसमें आपको क्या तकलीफ है ? आपको कोई तकलीफ है क्या ? वो तब चुप हो जाते। बाद में आफ्टर फोर्टीन-फिफटीन इयर्स-आफ्टर काकाजीज़ डीपार्चर 'श्री कृष्ण' सीरियल आई। और वो वह श्री कृष्ण सीरियल देख रहा था। उसमें एक ऐपिसोड था। कृष्ण भगवान कुबजा को देखते ही बोलते– सुंदरी ! तो वो बोलती है कि मेरे में आपको क्या सुंदरता दिखाई दे रही है ? मैं तो सब अंग से कुबड़ी हूँ। तो कृष्ण परमात्मा उसे कहते हैं कि आप नहीं, आपकी आत्मा सुंदर है। तभी उन्नीकृष्णन् को ऐसा ख्याल आता है कि काकाजी मुझे

सुंदरम् क्यों बोलते थे ? **काकाजी मुझे नहीं देखते थे, मेरी आत्मा को देखते थे।** ऐसी थी काकाजी की दृष्टि और ऐसे थे काकाजी के शब्द ! उनको समझने के लिए इतना टाईम चला गया ! ऐसे तो बहुत से प्रसंग हैं।

...हम सब युवक काकाजी के साथ रहते थे— राजुभाई, राजुभाई (ठक्कर), वशीभाई। हमारे जीवन में भी ऐसे बहुत से प्रसंग बनते थे। तब भी काकाजी की बात समझने में सालों निकल जाते थे। इसलिए काकाजी की अभी ये कैसेट सुन रहे थे, उसमें बहुत अच्छी बात बताई— **'भगवदी का प्रसंग ! भगवदी का स्वीकार !'** और गणपति के दृष्टांत से **दिनकरभाई ने भी** बहुत अच्छा **बताया** कि गणपति है वो शुभ कर्ता है, कष्ट हर्ता है। ऐसे गणेशजी का वर्णन करके बताया कि **ऐसा भगवदी, वो शुभ कर्ता है— हमारे लाभकारी है और उनका स्वीकार करो। ये बात काकाजी ने बार-बार दोहराई है।**

हमारे हरखचंदभाई का एक प्रसंग बताता हूँ। हरखचंदभाई को व्यवस्था बहुत ही अच्छी तरह चाहिए और ताड़देव में हम सब आठ-दस भाई लोग रहते हैं। छोटी जगह है। तो जब ज्यादा लोग आते हैं, तो सब अस्त-व्यस्त रहता है और सुबह में तो वशीभाई को, अश्विनभाई, राजुभाई को ऑफिस जाने को रहता है, सब जल्दी में होते हैं। काकाजी सुबह में सात बजे से आठ साढ़े आठ बजे तक तो धून कराते हैं; फिर बाद में सब तैयार होते हैं। उसमें बहुत दौड़भाग होती है। तो हरखचंदभाई के भी कपड़े अदल-बदल हो जाते हैं। ऐसे बहुत बार हो गया। फिर उनसे रहा नहीं गया, तो काकाजी के पास गए। यह करीब '78 की बात है। काकाजी के पास जाकर उन्होंने करीब एक-डेढ़ घंटा अपनी सब कथा-व्यथा बताई कि इस-इस तरह से कुछ भी व्यवस्था नहीं है। कुछ भी ऐसे ठीक नहीं है। कुछ ऐसी व्यवस्था करनी चाहिए, ऐसा रहना चाहिए। ऐसा सब बहुत बताया। काकाजी करीब एक घंटे तक सोफे पर बैठ कर सब सुनते रहे। फिर उनकी सब कथा पूरी हो गई। उसी दिन शायद गुरुजी आए थे। वो काकाजी का नहाने का बाजोट (चौकी) लेकर आए थे। तो काकाजी ने कहा कि देखो ! मेरा बाजोट आ गया। अभी ये भी हो जाएगा। तो उसको लगा कि मैंने इतना डेढ़ घंटा काकाजी को ये सब बताया और काकाजी ने क्या बात करी ? मेरा बाजोट आ गया ! वो बहुत ही ये हो गया। बाद में तो वो प्रसंग पूरा हो गया, हम लोग तो भूल भी गए कि काकाजी ने उनकी बात को ऐसे ही उड़ा दी, कुछ सुना नहीं। मगर हमारे राजुभाई भट्ट हैं, उनकी दृष्टि बहुत विचक्षण है। वो बताते हैं कि गुणातीत पुरुष क्या कहना चाहते हैं, उनके पीछे क्या हार्द है। कोई मुक्त भी क्या कहना चाहता है, वो उसको पता चलता है। तो उसने बताया कि काकाजी वो बताना चाहते थे कि हमें ये बाजोट लाने को 25 साल हो गए इधर रहते-रहते— ये खाली नहाने की व्यवस्था करने को ! तो तुम्हारी व्यवस्था भी हो जाएगी। इसमें कौन-सी बड़ी बात है ? यूं काकाजी की ऐसी बात समझने में हमें इतना टाईम जाता है।

अभी हम कैसेट सुनते हैं और **गुरुजी ने भी कल बताया कि काकाजी के स्वधाम जाने के बाद में मुझे होश आया कि क्या जीना चाहिए ? कैसे वर्ताव करना चाहिए।** इसी तरह से ये गुणातीत पुरुषों को समझने में हमें बहुत ही टाईम लगता है। स्वामिजी इधर पधारे हैं, दिनकरभाई भी इधर पधारे हैं तो हमें वो प्रार्थना करनी है कि आप जो बताते हैं, आप जो कहना चाहते हैं, आपकी जो भाषा है वो समझने में हम इतना समय ना लगाएं, जल्दी से जल्दी समझ पाएं—ऐसी आप हम पर कृपा करें क्योंकि आपकी धीरज का तो कोई अंत नहीं है। आज समझ लो तो आज से शुरू और सौ साल बाद में समझो तो तभी शुरू। उनको कोई जल्दीबाजी नहीं है, पर वो चाहते हैं कि हम जल्दी से जल्दी समझें। ऐसे बहुत से इन्सीडन्सीस हैं। कहने बैठें तो बहुत टाईम चला जाए; हमें स्वामिजी और सबका आशीर्वाद लेना है।

.....गुरुजी को काकाजी के प्रति बहुत ही लगाव है और उनके प्रति उनकी भक्ति दिखाई पड़ती है। मंदिर के वो सभा हॉल में एक मूर्ति है — काकाजी सोफे पर बैठे हैं। उनको ऐसी प्रतीति करवाती है कि मैं इधर प्रगट हूँ। गुरुजी बताते हैं कि जब मैंने **ये मूर्ति को बनवाया, तब वो ब्लैक एण्ड व्हाईट थी और दिनभर-दिन होते अभी वो कलर्ड हो गई है—ऑटोमेटीकली ! और जैसा ताड़देव में ओरिजिनल कलर था, ऐसा कलर उसमें आ गया है।** ऐसा ऑटोमेटीक हुआ है। वो तो हमने भी देखा था कि पहले वो ब्लैक एण्ड व्हाईट था। अभी दिखाई पड़ती है, तो कलर्ड दिखाई पड़ती है। क्योंकि **उनके लिए ये सब फोटोग्राफ नहीं है, वो साक्षात् है। इसी तरह से ये देखते हैं।** आज गुरुजी के चरणों में भी उनके प्रागट्य के अवसर पर प्रार्थना करते हैं। **गुरुजी का काकाजी के साथ का संबंध कोई बहुत ही विशिष्ट संबंध था।** कभी भी काकाजी के पास कुछ भी बात करनी हो, तो वे कर सकते थे। उन्हें ऐसा नहीं लगता था कि काकाजी मेरे से नाराज हो जाएंगे। मेरा ये स्वभाव देख कर काकाजी मेरे बारे क्या सोचेंगे ? ऐसा कभी भी उन्हें नहीं हुआ। अभी एक से सात तारीख तक पंचयज्ञ की शिविर थी। तभी काकाजी की एक कैसेट सुनी थी, तो उसमें गुरुजी का एक प्रसंग आया था। काकाजी कहते हैं कि गुरुजी मेरे को बोल रहे थे कि मेरे को ये आदमी पसंद नहीं है। तो मैंने पूछा— क्यों पसंद नहीं है ? तो बोलता है—वो काला है। तो काकाजी वो सभा में ही बोलते हैं कि तेरी माँ भी काली है। वो क्यों पसंद है ? यूं ऐसी बातें काकाजी को बताया भी होगा और काकाजी ने ऐसी बात भी करी होगी। मगर वो बात भरी सभा में यूं बताएं, तो भी गुरुजी को ऐसा नहीं कि काकाजी को कुछ कहना नहीं है। जो भी बात है, वो कहते थे। मैंने गुरुजी को फिर ऐसा पूछा था, तो कहा कि **अपने को सत्पुरुष के पास खुल्ला रहने का है**, जो भी है वो बता देने का। **अपना स्वभाव उसके पास ही हम अगर नहीं कहेंगे, तो वो हमारे लिए कैसे प्रार्थना**

करेंगे ? यूं उनकी भावना ये थी कि **गुणातीत पुरुषों के पास हम ऐसा खुल्ला रहेंगे-ओपन रहेंगे-उनके पास कुछ भी मन की चालाकी नहीं रखेंगे, तो वो जल्दी से राजी हो जाएंगे और हमारे लिए खुद प्रार्थना करेंगे।**

कल हम डॉक्टर जे.पी. शर्मा के साथ जा रहे थे, तो वो बोले कि मैंने काकाजी को बोला कि मैं धून नहीं कर सकता हूँ। तो काकाजी ने बोला कि आपको आधा घंटा धून करनी चाहिए। तो कहे– आधा घंटा क्या, मैं पाँच मिनिट भी धून नहीं कर सकता हूँ। काकाजी ने पूछा–ठीक है, आप कितनी देर धून कर सकते हो ? पंद्रह मिनिट ! तो बोला– 'नहीं'। पाँच मिनिट ? तो बोला– 'नहीं'। तो कहा कि आप ऐसा करो कि दो मिनिट धून करना, बाकी का मैं करूंगा ! **ऐसी काकाजी की कृपा थी।** आज वो आधा घंटा – एक घंटा भी धून कर सकते हैं ! काकाजी की प्रीति ऐसी थी। गुरुजी का काकाजी के साथ ऐसा संबंध था। काकाजी उनको कुछ भी बोल सकते थे। तो आज गुरुजी के चरणों में प्रार्थना करते हैं– हे गुरुजी ! आपके साथ का हमारा संबंध बहुत ही ऐसा गहरा बने। जैसा आपका काकाजी के साथ संबंध था, ऐसा ओपननेस का-खुल्लापन का हमारा भी आपके साथ का संबंध बन जाए और उसमें जो मन की चालाकी है, मन की जो हमारी होशियारी है, वो हम छोड़ कर ऐसे बालक बन कर-भुलका बन कर गुणातीत पुरुषों को राजी कर पाएं। **काकाजी मन की चालाकी के बारे भी बहुत बातें करते थे और गुरुजी भी खूब ही समझा रहे हैं कि हमारी चालाकियाँ कैसी हैं ?** कल गुरुजी ने बहुत अच्छी तरह से समझाया कि कोई मेरी खबर पूछते हैं, क्योंकि मैंने उनको बुलाया नहीं ! सो वह किसी को पूछता है कि क्या आज गुरुजी की तबियत अच्छी नहीं है ? क्या हो गया है ? गुरुजी कहते हैं कि दरअसल उसकी तबियत अच्छी नहीं रही, क्योंकि उसको बुलाया नहीं है। ऐसी मन की चालाकी है। वो छोड़ कर सच्चे हृदय से, खुल्ले दिल से ऐसे गुणातीत पुरुषों के साथ हमारा संबंध बन जाए और उत्तरोत्तर वो बढ़ता ही रहे– ऐसी आज सभी गुणातीत स्वरूपों के चरणों में प्रार्थना करते हैं।

दिल्ली का समाज बहुत ही बढ़ा हुआ है। 1975 में जब मैं दिल्ली आया था, तब काकाजी को नंदाजी के पास जाने के लिए कोई गाड़ी नहीं थी। पकाई साहेब थे, उनके पास एक फियाट गाड़ी थी। तो पकाई साहेब काकाजी को बोलते हैं–मैं दो बजे आऊंगा और आपको नंदाजी के घर तुगलक रोड छोड़ दूँगा और बाद में आप आ जाना। **काकाजी** तो **बहुत फ्लॅक्सीबल थे।** वो बोले– ठीक है, बाद में हम रिक्शा में आ जाएंगे, आप हमें वहां छोड़ दो। तो काकाजी को वहां छोड़ दिया। बाद में चार घंटे तक वहां बैठे रहे। नहीं चाय, नहीं कुछ नाश्ता - कुछ भी नहीं, ऐसे कोई सत्संग की तो बात भी नहीं और ऐसे ही बैठ कर भारत साधु समाज की और ऐसी-वैसी सब बातें हो रही थी। बाद में हम रिक्शा से वापिस आए और रिक्शा भी उधर मिलनी मुश्किल थी। तो रिक्शा स्टेन्ड से रिक्शा लेकर इधर आए। करीब एक-डेढ़ घंटा लगा था। **काकाजी की दृष्टि हमेशा योगीजी महाराज की तरफ थी कि योगीजी महाराज ने संकल्प किया है कि यहां दिल्ली में ऐसा मंदिर बनाना है और इसी तरह से एक समाज दिखाई देता था उनको।** दस साल तक यहां कोई रिज़ल्ट नहीं दिखता था। फिर भी ये सब बातें आज हो रहीं हैं ! यह इतिहास सभी को मालूम है। आज उसके बारे में ज्यादा बात करने के बजाय दिल्ली समाज को खूब-खूब धन्यवाद है। गुरुजी के प्रति ऐसा लगाव से, ऐसा भाव से जो जीवन जीते हैं और उनका जो दर्शन होता है, उससे अंतर में बहुत ही खुशी होती है। तो सभी गुणातीत स्वरूपों के चरणों में हम सभी की ओर से आज प्रार्थना हैं कि गुणातीत स्वरूपों के साथ का ऐसा संबंध दृढ़ हो जाए और उनकी प्रसन्नता के पात्र बन जाएं। सहजानंदस्वामी महाराज की जय !

श्री मांगेराम गर्गजी

...स्वाभाविक तौर से कोई पुरुष जब पुरुषार्थ से ऊपर उठ करके महापुरुष बनता है, तो एक दिशा दिया करते हैं–अपने पावों के चिह्न छोड़ जाते हैं और उस पर जब समाज चलता है तो समाज का उत्थान होना स्वाभाविक है। आज अगर हम अपनी संस्कृति के अंदर झांक कर देखें, तो **हमारी संस्कृति ने सदैव त्याग किया है। त्याग से हमारी विश्व में पहचान है...** मुझे प्रत्येक वर्ष सदैव स्वामिजी के आशीर्वाद से यहां आने का अवसर मिलता रहता है। मैं किन शब्दों से आभार व्यक्त करूं ? मुझ जैसे तुच्छ व्यक्ति को आप सम्मान दे करके और मुझे दो शब्द उनके श्रीचरणों में कहने का अवसर देते हैं, इससे **मैं भी महसूस करता हूँ कि जो मैं साल भर कमा रहा हूँ, वो कमाई का कारण केवल उनके श्रीचरण हो सकते हैं...** आपका स्नेह सदैव बना रहे ऐसी मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ...

पू. विज्ञानस्वामिजी

...पू. काकाजी एक ऐसी विभूति पृथ्वी पर आ गई-आई है कि जिन्होंने गुरुभक्ति का नाता कैसा होना चाहिए, वह खुद के वर्तन से बताया। काकाजी का साक्षात्कार दिन – वह योगीजी महाराज से उनका कोई अनोखा संबंध कहा जाए। इस बारे में कई बातें हो गई होंगी। बताया होगा कि जो परम कठिन परिस्थिति में काकाजी ने बापा के वचन से, उन्हें भगवान मान कर - नारायण का स्वरूप मान कर जो

१९५२-२००२ प्रथम प्रभु ने पत्र पाया. ५५१ 50 साक्षात्कार स्वर्णजयंती

चुनाव लड़ा और बापा की हाश ली, उसका ये परिणाम था। हमारे पुरुष अनादि के हैं ऐसा हम कहते हैं और हैं भी। फिर भी **हमारे वर्तन में हम ग़ाफिल ना रहें इसलिए उन्होंने खूब सहन किया है।** अभी भी जो प्रगट प्रभु अस्तित्व में हैं, उन्होंने भी गुरु के साथ कैसा संबंध होना चाहिए, वो खुद की जिंदगी में वर्तन द्वारा बताया है, खाली कथा करके नहीं बताया है। जिस परिस्थिति के अंदर काकाजी ने चुनाव लड़ा, वह उनका उनके गुरु के साथ कोई अनोखा संबंध था। स्वामिजी जो अत्यंत भीड़ा-भक्ति से गुज़रे, वह उनका उनके गुरुजी के साथ कोई अनोखा संबंध था।

पू. गुरुजी का भी काकाजी के साथ कोई अनोखा संबंध था। कई प्रसंगों की बात हुई, मैं भी एक प्रसंग की बात करूंगा। कई वर्षों पहले जब दिल्ली में कुछ नहीं था। तब उनकी सेवा का मुझे थोड़ा लाभ मिला था। जिस परिस्थिति के अंदर शुरूआत के दिन बीते, वे खूब कठिन थे। काकाजी को देखें तो– ही वॉज़ फिज़ीकली फिट, फॉर वॉट ही डिड ! गुरुजी को देखने जाएं– ही वाज़ टोटली अनफिट, फॉर वॉट ही डिड ! उनका फिज़ीकल स्ट्रक्चर ऐसा था। ऐसा डेलीकेट जिनका स्ट्रक्चर था, उनको भी स्थिति भी करा दी। तो, हम सभी के नसीब का तो कोई पार ही नहीं कि हम सभी के ऊपर वे कृपा करने ही वाले हैं...

जीवन में बनते प्रसंग - प्रसंग नहीं हैं, छोटी-बड़ी गुत्थियाँ जो हैं, वे गुत्थियाँ नहीं हैं। पर, उनसे हमारी प्रीति का जो नाता है उसकी परीक्षा है। हम उन्हें कैसा और कितना मानते हैं – इसके लिए महाराज ऐसे प्रसंग लाते हैं। तो जो प्रसंगों में से ये पुरुष गुज़रे हुए हैं, ऐसी कोई भीड़ा-भक्ति हमें सहन करनी रही नहीं है। **फिर भी आंतरिक कुरुक्षेत्र से गुज़रता साधक बुद्धिशक्ति से नापता ही रहता है।** बापा ने काकाजी पर जो अतिशय कृपा करके दर्शन कराया, ऐसी ये गुणातीत पुरुष कृपा करें तो गुणातीत ज्ञान को हम पचा सकें ऐसा है।

आज सभी सत्पुरुषों के चरणों में इतनी प्रार्थना है कि जिस सिद्धांत पर आप हमें चलाना चाहते हो– विचार करें तो खूब कठिन भी है और विचार करें तो कुछ भी नहीं है। ये कठिनाई का जो रस्ता है, उस पर **किसी भी दिन मन-बुद्धि से उसमें जले नहीं, प्रसंग पर 'आप' ही हो, ऐसा हमेशा हर प्रसंग पर माना जाए।** बोलता हूँ उतना सरल नहीं है, मांगता हूँ इतना मुश्किल ये पुरुषों के लिए नहीं। आज काकाजी की स्वर्णजयंती के अवसर पर इतनी ही प्रार्थना करता हूँ कि हम जो भी कोशिश करते हैं, वह आप खूब मान कर स्वीकारो। **आप हम पर राजी हो सको ऐसा हमारा वर्तन नहीं है, फिर भी करुणा करके राजी हो जाओ।** काकाजी कई बार कहते थे कि अब तक का सब माफ। तो आज यह मांगता हूँ कि हमारी करनी **अब तक का माफ करके आप आपका बना लो।** जय स्वामिनारायण !

प.पू. स्वामिजी

......कल शाम को मैंने एक बात बतलाई थी, हम उत्सव क्यों मना रहे हैं ? उसके पीछे एक भावना है। **गुणातीत पुरुषों के जीवन का यदि सम्यक् दर्शन हो जाए, गुणातीत पुरुषों का यदि लीलाचरित्र जँच जाए, गुणातीत पुरुषों के गुण, समद्धि, ऐश्वर्य में हमारा मन यदि डूब जाए, तो संसार में कोई प्रकार का प्रश्न नहीं रहता है।** तीन प्रश्न हैं– शरीर का , दूसरा धन का, तीसरा मन का। आज शरीर में इतने प्रकार के रोग आ रहे हैं, किसी को मालूम भी नहीं है... गुजरात की धरती पर आज सत्रह लाख ग्रेज्युएट्स बेकार हैं। वहां पंद्रह सालों से खेती हो नहीं रही है। ऐसी परिस्थिति गुजरात की है। एक बात मैं अच्छी तरह बताना चाहता हूँ। गुजरात की प्रजा में कलियुग का प्रभाव कम है। मगर एक या दूसरे प्रश्न में हर एक व्यक्ति का मन डूबा हुआ है। **ये जो स्वर्णजयंती हम मना रहे हैं उसका कारण एक ही है– काकाजी और पप्पाजी जैसे गुणातीत पुरुषों के चरित्र में हम डूब जाएं, तो सिर्फ आनंद ही आनंद है।**

तीन बात कहता हूँ– मैं साधु नहीं था, युवक था। काकाजी का समागम करने के लिए मैं ताड़देव गया था। एक मल्टीमिलियॉनर सेठ काकाजी के पास आ गया। मैं बाहर निकल रहा था जिससे कि उसे अपनी कोई पर्सनल बात जो करने की हो, वो करे। मुझे काकाजी ने बोला कि आप यहां बैठ जाओ। मल्टीमिलियोनर काकाजी के सामने दो हाथ जोड़ कर बोला– काकाजी मेरा व्यापार लुढ़क गया, मेरे जो सगे-संबंधी हैं उसमें प्रॉब्लम आ गया। कल खाने के लिए पैसा कहां से लाऊंगा– ये प्रॉब्लम आ गया है। मैं पॅकार्ड गाड़ी रखता हूँ, पर कल का मुझे प्रॉब्लम है– मैं क्या करूं ? तब काकाजी ने सिर्फ दो लाईनों में बात बतलाई– 'हमारी परिस्थिति आपके जैसी ही है !' हमारे ताड़देव में– घर में, सब्जी लाने के लिए पैसे नहीं हैं !! वो तो सोच में डूब कर काकाजी के सामने देखता रहा। आपके पास सब्जी लाने के पैसे नहीं हैं ? काकाजी बोले कि मैं सच कहता हूँ। मगर हमारे गुरुदेव योगीजी महाराज ने इतने अद्भुत आशीर्वाद दिए हैं कि यहां अशांति कभी आती ही नहीं है, यहां शांति ही है। अब मेरी बात सुनो– यह बड़ी बात हो गई, यहां अशांति नहीं आती है और शांति है। यह तो एक लेवल की बात है। मगर काकाजी ने सेठ को कह दिया, आप यदि मेरे गुरुदेव की स्मृति करोगे और भजन करोगे तो भले ही आपकी इकोनोमीक साईड की गाड़ी नीचे उतर गई है, पर आपके जीवन में दीपावली का उत्सव हो जाएगा और... हुआ भी ! **गुणातीत पुरुषों के जीवन के ये प्रसंग हम सुनते हैं, मगर वह स्थिर करने के लिए**

भजन अवश्य है। मैं जब यहां आया– महापूजा चल रही थी, वशी अद्भुत धून में लगा हुआ था। मैं वहां पांच-दस मिनिट खड़े रह कर सुन रहा था। ठाकुरजी के पास दर्शन कर रहा था तो वहां भी सुन रहा था। मुझे खूब आनंद आ गया। आपने भी धून देखी होगी। ताड़देव की धरती पर काकाजी सबको भजन कराते थे और कथावार्ता से अच्छे सुझाव देते थे। जीवन में उदासी की होली और दीवाली आने वाली ही है। मानवजीवन मीन्स प्रॉब्लम, जीवन में प्रॉब्लम है ही। मगर भगवान और भगवत्स्वरूप संत का आश्रय, उसकी निष्ठा यदि दृढ़ हो जाए, **गुरुजी जैसे संत के साथ मैत्री और प्रीति यदि हो जाए, तो तन, धन, मन तीनों का प्रॉब्लम शांत हो जाए और सत्युग बढ़ता है।**

एक दूसरी बात मैं आपको बताता हूँ, भरतभाई ने बहुत अच्छा प्रश्न किया। आपने सुना होगा– हरखचंद हमारे जैसा एक साधु है। वो मोस्ट इमोशनल है। तो काकाजी के सामने उसने एक घंटे तक अपना प्रश्न रख दिया। ऑन धी वेरी मोमेन्ट मैं यह सोच रहा था – काकाजी क्या जवाब देंगे ? खूब एलर्ट होकर मैं सुनता था। मगर काकाजी शांत हृदय से बैठे थे। वे सुनते भी थे और भक्ति से वे देखते भी थे। वो सुझाव– काकाजी में से प्रभु ने दिया ! कैसी उनकी धीरज कि– एक घंटे तक सुनते ही रहे, सुनते ही रहे, सुनते ही रहे और एक वाक्य में काकाजी ने उसके प्रश्न को सोल्व कर दिया ! 'आज पच्चीस साल के बाद स्नान करने के लिए बाजोट मिला है '! हरखचंद की पोझीशन उस समय कैसी हुई होगी ? वो बेचारा शांत हो गया होगा...

यह एक ही सिम्पल बात। मगर आपको खूब प्रेरणा देगी, खूब प्रेरणा देगी- आपको खूब बल मिल जाएगा। एक माँ, आज कलियुग में अपने छोटे लड़के की बात एक घंटे तक मिठास से, प्रेम से, भक्ति से, विनम्रता से - डूब जाकर ऐसे नहीं सुन पाती। **काकाजी अपने भक्तों में प्रभु के भाव से डूब गए।** तो अपनी एक ही फर्ज़ है, ढाई दिन से यहां काकाजी का गुणगान- गुरुजी का गुणगान सब ने गाया होगा। उसमें से जो कोई सूत्र या इंसीडन्ट आपको मिल जाए, उसे याद करते रहना।

एक बात सुनना, अच्छी तरह से सुनना। दिमाग में बैठे और ना बैठे, मगर मान लेना। महिमा की बात है, भगवान स्वामिनारायण वड़ताल की धरती पर स्नान कर रहे थे। तो उन पर से पानी जमीन पर जाता था। कपड़े निकाल कर कई बच्चे वो पानी में स्नान कर रहे थे। भगवान स्वामिनारायण ने अपने सेवक मूलजी ब्रह्मचारी को पूछा– आवाज़ कहां से आ रही है ? देखा तो लड़के सब स्नान कर रहे थे। 'महाराज आपके प्रसादी के पानी में तीन छोटे-छोटे बच्चे स्नान कर रहे हैं।' भगवान स्वामिनारायण ने उन्हें आशीर्वाद दे दिया ! उसी वक्त भगवान स्वामिनारायण ने मूलजी ब्रह्मचारी को बोल दिया– वो जो तीन लड़के हैं, वे शिव, ब्रह्मा और विष्णु जैसे हो गए ! आपको ये बात दिमाग में नहीं बैठेगी। एक सर्जनहार है, एक पोषण करने वाला है, एक नाश करने वाला-त्रिलोकी के नाथ हैं। शिव पुराण मैंने पढ़ा है। पार्वतीजी शिव पुराण में शिवजी से प्रार्थना करती हैं कि आप जो मस्त अवस्था में सुख, शांति और आनंद से बैठे रहते हो, ऐसी स्थितप्रज्ञ अवस्था में मैं कैसे बैठ पाऊं ? तो भगवान शिव पार्वतीजी को बोलते हैं– जिस प्रभु को याद करके मैं प्रार्थना करता हूँ, वो प्रभु का दर्शन तो मुझे मिला नहीं है; मगर मैं सच्चे दिल से प्रार्थना करता हूँ और प्रभु की सेवा करता हूँ। इसलिए प्रभु मुझे आनंद में रखते हैं, आपको भी आनंद में रखेंगे।

मैं ये बात दूसरी तरह से समझाता हूँ– हम बहुत भाग्यशाली हैं। मेरी बात समझने के लिए थोड़ा प्रयत्न करना। मैं सच्ची बात बतलाता हूँ। हम बहुत भाग्यशाली हैं। **भगवान स्वामिनारायण** ने पृथ्वी पर आकर अद्भुत वरदान दिया और चौथा वरदान जो है, वो **वे संपूर्ण पुरुष, सर्वज्ञ पुरुष, निर्दोष पुरुष, आनंदघन मूर्ति, प्रेमाल मूर्ति ना होती तो ये वरदान दे ही नहीं सकते।** जो निष्कामी है वो दूसरे को निष्कामी बनाता है, जो पवित्र है वो दूसरे को पवित्र बनाता है, जो निर्मानी है वो दूसरों को निर्दंभ बनाता है। **हमारे लिए ब्रह्मविद्या की कॉलेज बहुत ईज़ी हो गई** ! जीवन जीना बहुत ईज़ी हो गया।

आज कलियुग में जीवन जीना– भारत जैसी धरती की करूण हालत है, गुजरात की धरती की करूण हालत है। 17 लाख यूथ्स आर ऑन धी रोड है। वो सब चिंता में डूबे हुए हैं। यू.पी. में क्या होता होगा ? बिहार का क्या होता होगा ? मगर **हमारे लिए प्रभु ने सेफ्टी वाल्व रखा हुआ है। भगवान स्वामिनारायण का एक अद्भुत वरदान है– 'सच्चे संत द्वारा मैं अखंडित रहूँगा ही'। मानव आत्मा पर भगवान की जब कृपा होती है, तो संतों का जोग होता है और संतों का जोग होने के बाद संतों के साथ यदि मैत्री हो जाए, तो उसको राजी करने की भावना जाग्रत होती है। संत के हृदय में जब स्थान हो जाए तो उनकी (कृपा) दृष्टि से वे हमारे दोष का दर्शन कराता है। प्रीति बढ़ने पर, संबंध कराके आपको सही अर्थ में वे समझाते हैं कि आप मानो कि मैं पवित्र हूँ, मैं निर्दोष हूँ, मैं निष्काम हूँ ।** भगवान का निश्चय भगवान से ही होता है। **हम लोग बहुत भाग्यशाली हैं कि आज गुरुजी जैसे संत के योग में आ गए। वो भाग्य की कल्पना हम नहीं कर सकते हैं।**

एक दूसरी बात बीच में कहता हूँ, सुन लेना। हम उनचालिस संत 1966, 28 जून को सोखड़ा गए। काकाजी हर महिने एक बार सोखड़ा आते थे। गांव में हमारा मंदिर था। एक साधु ने उन्हें चिट्ठी लिख कर दे दी। काकाजी जब आते तो उसको बोलते कि भजन करना, स्वाध्याय करना। छः महिने तक वो साधु ने बहुत अच्छा भजन किया। यहां तक कि भजन करता-करता सेवा करता था। झाडू की सेवा, साफ-

सफाई की सेवा– तो भी भजन चालू, बर्तन की सेवा– तो भजन चालू, रसोई बनाए– तो मन में भजन चालू । एक श्रद्धावान संत की यह बात करता हूँ। उसने काकाजी को चिट्ठी लिख कर दे दिया। वो चिट्ठी काकाजी ने मुझे दिया। मैंने पढ़ा, उसमें लिखा था– काकाजी दो चीज़ बहुत परेशान करती है; काम – मुझे बहुत परेशान करता है, दूसरा है दंभ - मैं प्रदर्शन बहुत करता हूँ। थोड़ी सेवा करता हूँ, दिखावा ज्यादा करता हूँ। हर एक व्यक्ति का ऐसा स्वभाव है। काकाजी ने दो लाईनों में जवाब दे दिया -मैं भी वहां खड़ा था। काकाजी ने उसको बोल दिया– 'भुलकुं' की अदा से सेवा करो। तब वो संत ने पूछा कि **'भुलकुं की अदा'** से यानि कैसे सेवा करनी ? भुलकुं मीन्स छोटा बालक। काकाजी बोलते रहते थे– भुलकुं बनो, भुलकुं बनो, भुलकुं बनो। मैं जब ताड़देव जाता था, काकाजी के हृदय में से आवाज़ निकलता था– बापु, भुलकुं बनो। तो वो साधु ने पूछा कि भुलकुं का अर्थ क्या है ? और भुलकुं बनूं कैसे ? **भुलकुं बनाने के लिए तो स्वामिनारायण भगवान और गुणातीत पुरुष पृथ्वी पर आए हैं और रहे हैं।** हमारी ऐसी कोई ताकत नहीं है कि हम हमारे प्रयत्न से भुलकुं बनें। तो काकाजी ने भुलकुं का अर्थ दिखाया– **दो हाथ जोड़ कर हृदय से हर रोज़ प्रार्थना करते रहना कि मैं संतों का और संबंध वालों का दास बन कर रहूँ।** दूसरी बात– **तू राजी हो जा, इसके सिवा और कोई संकल्प में रमना नहीं-फंसना नहीं।** केवल आप ही राजी हो ऐसा मेरा हलन-चलन– देह का, इंद्रियों-अंतःकरण का हो। गुणातीत समाज को छोड़ कर पूरे ब्रह्मांड में ये आँख से देखने जैसी कोई व्यक्ति नहीं है। कान से सुनने के लिए कोई योग्य व्यक्ति नहीं है। सब बात करते हैं–दांभिकता से। हरिप्रियस्वामी मुझे चित्रलेखा के मालिक के यहां ले गया था। गुजराती का वो बहुत अच्छा पब्लिकेशन है। गुजरात में वो मटिरियल अच्छा देता है । उसने मुझे कहा कि योगीजी महाराज का वर्णन एक लाईन में करो। तो मैंने उसको कह दिया– **लाख पर्सन्टेज़ वर्तन, एक पर्सन्टेज़ प्रदर्शन– वो योगी महाराज** ! वो तो शून्यमनस्क हो गया। **गुणातीत पुरुष और गुणातीत पुरुष के योग में आया व्यक्ति ही देखने के लिए योग्य बनेगा, सुनने के लिए योग्य बनेगा, बोलने के लिए योग्य बनेगा।** हमें अच्छा सुनना है, हमें अच्छा देखना है, हमें अच्छा बोलना है। **मैं इसलिए आपको कहता हूँ–आपके लिए देखने जैसी व्यक्ति एक ही है– गुरुजी।** दूसरा मत देखो। टी.वी. मत देखना, सीरियल मत देखना, एड्वर्टाइज़ मत देखना। क्या देखना उसमें ? उसमें पंच महाभूत का विकार है। प्रकृति और स्वभाव में डूबी हुई आत्मा– गंदी आत्मा-क्या देखेंगे उसमें ? क्या फायदा होने वाला है ? इसलिए काकाजी ने वो संत को कह दिया– 'तू राजी हो जाए'– केवल ऐसी भावना से सेवा कर और **भक्तों में भगवान का भाव रख कर सेवा करो।** छः महिने तक इसी भावना से डूब जाना। 'भक्तों केवल ब्रह्म की मूर्ति'– **संबंध वाले बहुत बड़े हैं। प्रभु के संबंध के सामने हम क्या ? किंचित नहीं है।** भगवान स्वामिनारायण, बापा, शास्त्रीजी महाराज, काकाजी, पप्पाजी के संबंध के सामने मैं क्या ? मैं आज विचार करता हूँ, ये सब के सामने मैं झीरो हूँ। मैं दिल से मानता हूँ– भगवान स्वामिनारायण का संबंध कहां से ? शास्त्रीजी महाराज का संबंध कहां से? योगीजी महाराज का संबंध कहां से ? काकाजी, पप्पाजी जैसी अद्‌भुत विभूतियों का संबंध कहां से ? उसका दर्शन कहां से ? उसकी सेवा कहां से ? **इस संबंध के सामने - गुणातीत पुरुष के सामने यहां से प्रकृति पुरुष तक सब तैंतीस करोड़ देवता ज़ीरो हैं।**

ऐसा अद्‌भुत संबंध और अद्‌भुत पुरुष की स्वर्णजयंती जो आज हम मना रहे हैं, तब दिल की भावना से उसका जीवन और चरित्र में डूब जाना– समृद्धि और प्रताप में, उसके संबंध वाले में भक्त हृदय से डूब जाना-बस। ज़ीरो बन कर, सब की चरणरज बनने की भावना प्रकट करनी है। **गुरुजी ने ये उत्सव इसलिए रखा है।**

मुझे बहुत आनंद हुआ, आप सबका दर्शन हुआ।

इससे ज्यादा आनंद हो गया, **गुरुजी, दिनकरभाई सब की बात आप समझ लेते हैं।**

इससे ज्यादा ये आनंद है कि **गुरुजी की आँख के ईशारे के मुताबिक आप चलते हैं।**

इससे ज्यादा आनंद ये है कि **आपने गुरुजी की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए एक अनुपम ठहराव कर लिया है।**

आप सब अक्षरधाम के मुक्त हो- अक्षरधाम के लड़के हो। **अक्षरधाम के मुक्त के बिना 'तू राजी हो जाए'– ऐसी भावना हृदय में प्रगट नहीं होती है।** आप सब यहां बैठे हैं, आप सब का दर्शन करके मैं धन्य हो गया हूँ। मैं आपकी चरणरज बन कर कायम की सेवा करने के लिए मैं प्रार्थना करता हूँ, ऐसे आप भाग्यशाली हो। गुरुहरि और गुणातीत पुरुष आप सब को ऐसे सच्चे 'भुलकुं' बना कर सर्वांगी सुखी करें ऐसी प्रार्थना !

[31 मार्च, 2002 सायं]

प.भ. कानजीभाई (राजकोट)

... मुझे दो शब्द बोलने के लिए टाईम दिया है। आज काकाजी का साक्षात्कार स्वर्णजयंती महोत्सव के निमित्त काकाजी के बारे जो जानते नहीं थे, उनकी पूरी पहचान तीन दिन की शिविर में हो गई। काकाजी एक अद्‌भुत व्यक्ति थे, वे साक्षात्

महाराज के स्वरूप थे। उनका गुजरात में से यहां आने का क्यों हुआ, कार्य क्यों बढ़ा ? क्योंकि आप सब– यहां के हरिभक्त महाराज के टाईम में काकाजी के साथ होंगे, वर्ना इनका यहां आने का बनता नहीं। तो, आज ये दिल्ली केन्द्र बना कर काकाजी ने एक अनोखा केन्द्र बना दिया।

काकाजी के बारे में मुझे एक अनुभव हुआ है। दो साल पहले अमेरिका का वीज़ा लेने के लिए मैं और मेरी पत्नी मुंबई-ताड़देव मंदिर में ठहरे थे। वीज़ा लेने गए, तो पहले टाईम वो वीज़ा ऑफिस में बोला कि आपको वीज़ा नहीं दिया जाएगा। कुछ बात भी नहीं करी और ना बोल दिया ! हम वापिस चले आए। तो, भरतभाई-वशीभाई ने पूछा– क्या हुआ ? मैंने कहा कि कुछ पूछा नहीं और ना कर दी। वशीभाई और भरतभाई ने कहा कि दोबारा जाओ। मैंने कहा दोबारा मुझे जाना नहीं है, मुझे ऐसा कोई काम नहीं है। मेरा बहनोई-रिश्तेदार बहुत समय से कह रहे थे अमेरिका आओ–सो मुझे सिर्फ घूमने के लिए जाना था। तो, अब तो मुझे जाना नहीं है। वशीभाई ने बोला नहीं आप दोबारा आठ दिन के बाद जाओ। हम महापूजा में काकाजी को याद करके प्रार्थना करेंगे, जरूर आपको वीज़ा मिल जाएगा। तो मेरा मिसिस ने बोला कि हम दोबारा जाएं– आप बोलते हैं ऐसे ही काकाजी काम थोड़ा कर देते हैं ? आप बोलो कि खेत में पानी लगाने आओ, तो काकाजी कर देंगे क्या ? काकाजी को तो बड़ा काम करने के लिए कहना चाहिए। तब मुझे हुआ कि ये वीज़ा लेने के लिए जाएगी, तो काकाजी जरूर कर देंगे– ऐसा मेरा विश्वास है। तो, मैं और मेरी मिसिस फिर मुंबई आए, मीनाबेन के घर पर ठहरे थे। चार बजे उठ कर छः बजे लाईन में लग गए, खूब बारिश हो रही थी। तो, मैंने फिर बोला कि हमें वीज़ा लेने की जरूरत नहीं है, मुझे वीज़ा नहीं लेना है। पर आए हैं तो चलो जाएं। वहां अंदर एक हजार विज़िटर्स वीज़ा लेने के लिए आए थे। तो मुझे हुआ कि वीज़ा मिलने वाला नहीं है। मेरी मीसिस आँखें बंद करके काकाजी का ध्यान कर रही थी– 'स्वामिनारायण-स्वामिनारायण' कर रही थीं, तो एक प्रकाशपुँज वहां खिड़की में चला गया और हमारा एनाऊंस हुआ कि तीस नंबर–मिस्टर पटेल आ जाओ। हम गए तो कुछ देखा-करा नहीं। वो फोर्म तैयार था, फोर्म पर ठप्पा लगा कर बोले कि पैसे भर दो। तब हमें अनुभूति हुई कि काकाजी साक्षात् हमारे साथ हैं। हर कोई कार्य में हमको साथ दे रहे हैं।

गुरुजी के पास दिल्ली केन्द्र में आज सात साल से हम आ रहे हैं। हमें ऐसा लगा है कि गुरुजी एक अद्भुत व्यक्ति हमें साथ दे रही है। जब स्वामिजी हमारे घर पर राजकोट आए थे, तब से हमें ऐसा लग रहा है कि **गुणातीत समाज के साथ जो हम जुड़े हुए हैं, उनको वे जिंदगी में कभी आँच नहीं आने देंगे।**

आज स्वामिजी, गुरुजी, कोठारीस्वामी, सब संतों का यहां दर्शन हुआ है। काकाजी की स्वर्णजयंती और गुरुजी के जन्मदिन पर हम सब आज यहां बैठे हैं, तो महाराज को प्रार्थना करेंगे कि गुरुजी को बहुत लंबी आयुष्य दें और ये एरिया में काकाजी का जो कार्य है, वो काकाजी की ऐसी शक्ति बन कर गुरुजी ज्यादा काम करें– यही भगवान के पास प्रार्थना करते हैं और ये केन्द्र अनोखा केन्द्र बनेगा यह काकाजी का आशीर्वाद है। वो साक्षात् फलीभूत हो रहा है। युवकों, बहनों, बालकों ने जो ये काम किया है, वह आसान बात नहीं है। हम देख कर ताज्जुब हो गए कि ये काम इतने दिन में करना कैसी बात है ? ये फोटो गेलरी में देखा, तो वह भी बताया कि अमदावाद में कर्फ्यू लगने के बाद ये पूरा प्रीन्ट निकालना आसान काम नहीं था। पर काकाजी ने साथ में रह कर ये काम करवाया है, ये निशंक बात है और अभी गुरुजी काकाजी स्वरूप हैं उसमें कोई शंका की बात नहीं है। जो गुरुजी के पास रहते हैं, वे कहते हैं कि गुरुजी तो हमें डेली मिलते हैं, इज़ीली अवेलेबल हैं... हमें किसी बात की फ़िकर नहीं है। **आज तीन दिन से ये देख कर मैं इतना प्रभावित हुआ हूँ कि एक कोई शक्ति काम कर रही है।** यह कोई व्यक्ति का काम नहीं है...

पू. दासस्वामिजी

...आज हमारा परम सौभाग्य है कि हम प्रत्यक्ष गुणातीत स्वरूपों की पावन सन्निधि में, उनके चरणों में बैठ कर, उनकी पहचान, उनके वारिसदार, उनके स्वरूप, उनके मानसपुत्र, उनके तक पहुँचने के लिए श्रेष्ठ माध्यम–ऐसे गुरुजी का प्रागट्य पर्व मना रहे हैं। स्वामिनारायण संप्रदाय में और उसमें भी खास करके अक्षरपुरुषोत्तम महाराज की गुणातीत संत परंपरा में, यह बात, यह सिद्धांत प्रचलित है कि जिन चरणों में– जिन गुरु के चरणों में हमें समर्पण करना है; वो गुरु की पहचान हम कैसे कर पाएं ? शास्त्रों में कहा जाता है – अनुभवी पुरुषों के वचनों में कहा जाता है कि **गुरु के गुरु** कैसे थे ? **गुरु** का **स्वयं** का वर्तन कैसा है और **गुरु के द्वारा तैयार हुआ** जो **समाज** है, उनका जीवन-उनका वर्तन कैसा है ? **अगर ये तीनों में एकरूपता है, समानता है, सच्चाई है, पारदर्शीता है तो उन गुरु के चरणों में – ऐसे नैमिषारण्य क्षेत्र समान संत के चरणों में तन, मन, धन और आत्मा समर्पण कर देने में कभी कोई धोखा खाता नहीं है।**

मेरी ये पर्सनल मान्यता है कि हम जिन संतों और महापुरूषों के संबंध में आए हैं, उन्हें हम भगवत्स्वरूप संत, परम एकांतिक संत, नैमिषारण्य क्षेत्र माने–ये तो हमारे जीवन का परम सिद्धांत बना रहना चाहिए। लेकिन उन्होंने अपने गुरुजनों का सेवन कैसे किया, समागम कैसे किया, संबंध कैसे बनाया, एक साधक की अदा से कैसे प्रसन्नता प्राप्त करी, वो भी हमें स्टडी करना चाहिए, समझना चाहिए-सोचना चाहिए। उनके जीवन के ऐसे प्रसंगों को आत्मसात् करना चाहिए, ताकि हमें भी उनके जीवन से प्रेरणा मिल सके।

कई सालों पहले की बात है– जब **गुरुजी** कॉलेज में पढ़ते रंगीले युवान–उनका मन और चित्त दुनिया के सभी रसों से भरपूर था। **बत्तीस बार 'मुग़ले आज़म' देखी** ! और एकदम से योगीजी महाराज ने दीक्षा तो दे दी। **दीक्षा देने वाले जानते थे कि ये अनादि के पुरुष हैं।** थोड़े दिन के बाद– ये तो जैसे गुजराती में कहते हैं ना कि 'नेवाना पाणी मोभे चढ़ाववानो मार्ग छे आ'। बहुत मनोमंथन के बाद गुरुजी ने योगी बापा के पास जाकर बोल दिया कि– मुझे लगता है कि दीक्षा लेकर मैंने कोई भूल करी है। योगीजी महाराज तो आर्षदृष्टा पुरुष थे। उन्होंने बड़ी दृढ़ता से, बड़े प्रेम से, बड़ी ताकत से, बड़ी शक्ति से बोला– तूझे ऐसा लगता है कि तूने शायद भूल करी है, लेकिन अक्षरदेरी में अक्षरपुरूषोत्तम महाराज, गुणातीतानंदस्वामी की साक्षी में हमारे गुरुदेव शास्त्रीजी महाराज ने तूझे दीक्षा दी है, वो कभी भूल करते नहीं हैं, करी नहीं है, करेंगे नहीं। और आज हम देख रहे हैं– काकाजी महाराज के साथ अद्‌भुत, अलौकिक दिव्य लगाव, प्रीति और संबंध के फलस्वरूप योगीजी महाराज, काकाजी महाराज, पप्पाजी महाराज के आशीर्वाद से, स्वामिजी महाराज, महंतस्वामी महाराज जैसों के साथ परम मित्रता से, निष्कपटभाव के संबंध से गुरुजी किस रूप में हमें दर्शन दे रहे हैं, हमें प्रेरणा दे रहे हैं, हमें आशीर्वाद दे रहे हैं। मुझे और खास करके प्रेमस्वामी को बहुत समय तक निकट से उनकी सेवा में, उनके सहयोग में रहने का लाभ मिला है।

दो-तीन पहलू– आस्पेक्ट्स इनके जीवन की बड़ी विशेषता है जो कि – गुणातीत समाज के सभी साधकों के लिए बहुत महत्त्व के हैं। एक तो **मन-बुद्धि से परे की सरलता** ! जब हम साधु समाज में आते थे, तब शायद पंद्रह दिन में पकाई साहेब या कोई एकाद ही आता होगा। तब कोई पिक्चर भी क्लियर नहीं था, जैसा विज्ञानस्वामी ने कहा– पंद्रह दिन भी यहां की सर्दी में रह नहीं पाएं, ऐसी प्रतिकूल उनकी शारीरिक हालात थी। फिर भी काकाजी महाराज के वचन में विश्वास रख कर काकाजी महाराज की योजना के वो अर्जुन बने। यूं मन-बुद्धि से परे का विश्वास। दूसरा **निष्कपटभाव**। जो भी गल्तियाँ हुई हों, जो भी मन में संकल्प-विकल्प हों, उन्होंने – योगीजी महाराज हों तो योगीजी महाराज के साथ, महंतस्वामी हों तो महंतस्वामी के साथ, काकाजी महाराज हों तो काकाजी महाराज के साथ, स्वामिजी महाराज हों तो स्वामिजी महाराज के साथ–जिनकी निश्रा में वो जितने दिन रहे, जितना समय रहे, बहुत निष्कपटभाव से संबंध रखा। आज भी वैसा ही संबंध चालू है। तो **एक तो मन-बुद्धि परे की सरलता, दूसरा सच्चे अंतर का निष्कपटभाव और तीसरी– जो भी सेवा सौंपी हो, जो भी आयोजन हो उसमें पूरी श्रद्धा से, लगन से, पूरे विश्वास से, पूरे उमंग से सभी प्रतिकूलताओं का सामना करते हुए आनंदपूर्वक जुट जाना। ये तीन बातें प.पू. गुरुजी के जीवन में हमें प्रतीत हुईं हैं।**

आज कोई लंबे प्रवचन करने का अवसर नहीं है। काकाजी महाराज के संकल्प, उनके आयोजन, उनका जो सपना था वो साकार होते हुए देख कर मनाने का ये अवसर है। हमें तो बहुत-बहुत खुशी है। गुरुजी सोने के सिंहासन पर बैठें और जूलूस निकले उसमें किसे आनंद ना हो ? लेकिन आज गुरुजी, स्वामिजी महाराज, कोठारीस्वामिजी, निर्मलस्वामिजी, दिनकरभाई सब यहां उपस्थित हैं, उनके चरणों में दो प्रार्थना हैं। एक तो गुरुजी का स्वास्थ्य एकदम निरामय और प्रफुल्लित रहे और जब हम और गुरुजी संस्कृत के विद्याभ्यास निमित्त ताड़देव रहते थे, तब एक दिन काकाजी ने सुबह से एक प्रकरण चलाया। रमेशभाई को बुलाया, बापू को बुलाया, भरतभाई को बुलाया, सबको बुलाया और कहने लगे कि आप जो नव योगेश्वर हैं उनका फोटोग्राफ आज ही आज खिंचवा लो। यहां मुझे मेरे सामने दीवार पर रखना है। फिर हमें कहा कि प्रेमस्वामी, कोठारीस्वामी, शास्त्रीस्वामी, गुरुजी और मैं–सेवक दासस्वामी–उनका पाँच का भी फोटो लगवा दो। मुझे सामने दीवार पर रखना है। वो कोई कोम्पयूटर का ज़माना तो था नहीं कि तुरंत फ्लॅापी बना लें या कुछ आर्टवर्क करके फोटोशॉप में काम करके तुरंत पंद्रह मिनिट – आधा घंटा में फोटो लग जाए। पर, सुबह से उन्होंने ये प्रकरण चलाया। दोपहर तक – शाम तक काकाजी अनुरोध करते रहे कि नव योगेश्वर का फोटो जल्दी लाओ, पाँच संतों का फोटो जल्दी लाओ। **मुझे आप में भावात्मक एकता देखनी है। ये काकाजी का सिद्धांत था, ये काकाजी का सपना था, ये काकाजी का आदेश था, ये काकाजी की प्रेरणा थी और उसी में काकाजी के आशीर्वाद समाविष्ट थे**। गुरुजी ने तो काकाजी के आशीर्वाद को झेल लिया है, उनकी पहचान बन गए हैं। उनकी कक्षा तक हमें–खास करके मुझे और प्रेमस्वामी को पहुँचना बाकी है।

तो आज गुरुजी के चरणों में, सभी प्रत्यक्ष स्वरूपों के चरणों में ये प्रार्थना करेंगे कि **काकाजी महाराज**

का जो सपना था, जो आदेश था उनको हम सपने में भी कभी भूलें नहीं। चाहे हम कैसे भी बनें, चाहे हम कैसी भी अलौकिक कक्षा पर पहुँचें, लेकिन दिव्य साधुता, गुणातीत साधुता हमारे जीवन में हमेशा चौबीस घंटे की बनी रहे, ये काकाजी महाराज की उम्मीद थी, आदेश था, सपना था। ये हम सब मिल कर साकार कर सकें और जैसे कि प्रदर्शनी में हमने देखा कि **लास्ट में जब काकाजी यहां पधारे और अपना जो कोट था वो गुरुजी को पहना दिया और पहचान दे दी– 'ये आपके गुरुजी'** ! तो गुरुजी का स्वास्थ्य एकदम प्रफुल्लित रहे और सालों तक यहां के सत्संग समाज को - मुमुक्षु समुदाय को उनके द्वारा काकाजी महाराज, अक्षरपुरूषोत्तम महाराज, शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज और सभी गुणातीत स्वरूपों का लाभ मिलता रहे। हम सब धन्य बनें, हमारा जीवन दिव्य बने इसी प्रार्थना के साथ जय स्वामिनारायण !

प.भ. अजय मल्कानी

...ये बड़े संत जो हैं, उनको हम कैसे जान पाएं कि ये सच में बड़े संत हैं। एक तरफ तो ये है कि इनकी योनि ही हमसे अलग है। तो हमारे लिए तो इनका नापतोल करना बिलकुल असंभव बात है। तो फिर, बिलकुल लॉजिकल है कि हम देखें कि संत के जो शिष्य हैं- जो उनके फोलोअर्स हैं उनका वर्तन कैसा है ? मैं इस बात पर पहले भी बोल चुका हूँ कि हम-जैसे कि मैं बोलता हूँ 'गुरुजी मेरे गुरु हैं'– तो उस पर मेरी बड़ी एक रिस्पोन्सिबिलिटी बनती है कि जो लोग बाहर से आते हैं, वे मुझे देख कर सोचेंगे कि गुरुजी कैसे हैं ? **अगर मैं उल्टा-सीधा वर्ताव करूं और मनमानी करूं, मेरे तौर तरीके ठीक ना हों तो वो गुरुजी के बारे क्या सोचेंगे ? यही सोचेंगे कि पता नहीं किस तरह का साधु है ? किस तरह की संस्था है–जहां अजय जाता है ?** तो **जो भी बोलता है कि भई – मेरा कोई गुरु है, उसको एक बात जरूर ख्याल में रखनी चाहिए कि ये इतनी छोटी बात नहीं है कि हर एक आदमी कह दे कि हाँ, फलाने मेरे गुरु हैं और मैं फॉलोअर हूँ।** अभी पिछले तीन दिनों से हमने कितनी और कितने लोगों की बातें सुनी और कितनी अच्छी भावना भी उन्होंने बताई। स्वामिजी ने बात करी कि जैसे ये तीन दिन के ये आयोजन का उद्देश्य क्या है कि ऐसे संत लोगों के साथ हमारा संबंध जो है, वो धीरे-धीरे बढ़ता जाए।

इसमें मैं जो बात करना चाहता हूँ वो ऐसी है कि –जैसे स्वामिजी हैं, गुरुजी, दिनकरभाई इन लोगों का आशीर्वाद और इन लोगों का ग्रेस-ब्लेसिंग्स तो हम लोगों के साथ हैं ही। वो सिक्के का एक पहलू है। पर, हर साधक को सोचना चाहिए कि सिक्के का जो दूसरा पहलू है वो उसकी अपनी साधना–अपना एफर्ट–अपना एस्पीरेशन है। एक बार कोई बड़े संत को किसी ने पूछा कि शास्त्रों में तो ऐसा लिखा है कि सब एक समान होते हैं। तो फिर आप में और मेरे में क्या फर्क हुआ ? आप भी सेईम और मैं भी सेईम ! वो संत ने शायद देखा कि ये आदमी सच में पूछ रहा है या उसमें समझने की बुद्धि है। तो संत ने बताया कि शास्त्रों में ठीक लिखा है कि सब एक समान ही होते हैं। पर, फर्क ये है कि मैंने साधना करी है और तुमने नहीं करी। मेरे में और तुम में यही फर्क रह गया है। अभी जैसे हम बात करते हैं और एग्ज़ीबीशन में मैंने देखा कि काकाजी की एक मूर्ति है जिसमें वो टाई और कोट– मतलब बिलकुल एक बिज़नेसमेन की तरह बेठे हुए हैं। मैं तो उनको मिला नहीं हूँ, पर अगर मुझे कोई बोले कि ऐसे बिज़नेसमेन थे और काफी बड़ा बिज़नेस संभाल रहे थे, वो अब इतने बड़े संत हैं– तो मैं कैसे मान पाऊंगा ? उन्होंने किस डिटेचमेन्ट से काम किया होगा ? ये मैं इमेज़िन भी नहीं कर सकता हूँ और अगर मैं समझूं कि उनके लिए काफी आसान रहा होगा वो बात भी मेरे लिए माननी बड़ी मुश्किल है। **हम गुरुजी का भी देखते हैं कि कितनी विपरीत ऐसे सरकमस्टानसिस में भी उन्होंने बिहेव किया** और अभी जैसे दासस्वामी ने बात करी कि इन लोगों ने जो जीवन जिया हुआ है, उससे हमको प्रेरणा मिलती है कि हम कैसे जीवन जिएं ? और जो साधना इन लोगों ने करी है, वो हमें भी करनी ही पड़ेगी। सब की अलग-अलग साधना है, पर जो भी साधक है उसको रेडी रहना ही पड़ेगा– ये साधना करने के लिए। अभी तक मैंने तो ऐसा कोई किसी के बारे सुना नहीं कि उसने कुछ साधना करी नहीं, पर उसको पूरी समाधि, निर्विकल्प समाधि-अक्षरधाम प्राप्त हो गया।

आज के दिन–गुरुजी का जन्मदिन है, तो मैं ये शुरु से ही सोच कर आया था कि आज के लिए हम लोगों को कोई आशीर्वाद-प्रार्थना नहीं करनी है , पर अपना संकल्प करना है कि अपनी साधना पूरी करने के लिए मेरे से जितना हो सके उतना मैं करूंगा और बाकी इन लोगों के हाथ में है, उनके ऊपर छोड़ दो और इसमें तो ये गिवन है कि इनका आशीर्वाद-इनका ब्लेसिंग्स तो हमारे साथ है ही। स्वामिजी आए हैं बड़ोदरा से, दिनकरभाई आए हैं शिकागो से–वो कोई अपने मजे के लिए तो नहीं आए हैं यहां। वो तो हमें देने ही आए हुए हैं। तो, ये तो पूछने की बात भी नहीं कि उनका आशीर्वाद मिलेगा या नहीं मिलेगा। एक सेईंग में लिखा हुआ है, जो कि मैंने फिर वो अपनी पूजा रूम में रख दी थी। इंग्लिश में सेईंग है– 'डिज़ायर नॉट, बट डिज़र्व एण्ड यू विल हॅव इट'। वो सेईंग तो बहुत अच्छी है, पर मेरा कहने का मतलब यह है कि करना भी ऐसा ही चाहिए। हम अपना देखें

कि मैं ठीक कर रहा हूँ या नहीं ? ये नहीं कि मेरे गुरु कितने बड़े या छोटे हैं। अगर मैं ठीक कर रहा हूँ, तो गुरु का ग्रेस-भगवान का ग्रेस हमारे ऊपर होगा ही। इसीलिए आज मैं - सब लोग संकल्प करके जाएं कि– जो हम सिन्सियरली कर पाएं वो हम करें और बाकी इन लोगों पर छोड़े। सहजानंदस्वामी महाराज की जय।

प.भ. बरार साहेब

आज सारे हिन्दुस्तान के कोने-कोने से आए लोग गुरुजी के चरणों में बैठ कर स्वर्णजयंती मना रहे हैं। तीन दिन से ये प्रोग्राम चल रहा है। जो काकाजी के बारे मेरे से पहले सारे बोल रहे थे और जिन्होंने काकाजी के दर्शन करे हैं, उन्होंने बताया है कि काकाजी कितने बड़े परोपकारी संत, कितनी सेवा लोगों की करते थे। एक बात मैं जरूर कहूँगा कि **बहुत संतों से, बहुत भक्तों से मिलने का मुझे मौका मिलता है...** कई लोगों को मैं देखता हूँ कि संतों के दरबार में आ जाते हैं, लेकिन बाहर निकल कर संतों की बात भूल जाते हैं। ये संस्था जो स्वामिनारायण की बनी है..... **इस संस्था का कोई भी व्यक्ति नशा नहीं करता, ना उनके घर में नशा वर्ता जाता है।** ये बहुत बड़ी बात है, कहने के लिए छोटी है पर बहुत बड़ी बात है। गुरुजी जिस परिवार में जाते हैं, औरतों को प्याज भी नहीं डालने देते। और एक बात देखने को मिलती है सबको कि जब भी गुरुजी को मिलते हैं गुरुजी खुश ही रहते हैं। **ऐसा गुरुजी को देखा है क्या किसी ने कि ये भोजन खाना है या चाय पीना है तो अपने पास बैठ कर पिलायें। कई संत कह देते हैं कि ले जाओ लंगर में, इनको भोजन कराओ प्रसाद दो; लेकिन गुरुजी खुद नज़दीक बैठते हैं** कि कोई भूखा ना रह जाए– ऐसी बात गुरुजी के मन में रहती है हर वक्त। **जब गुरुजी के दर्शन कर लेते हैं तो मन प्रसन्न हो जाता है।** बहुत उदाहरण गुरुजी के दे सकते हैं। **जो भी बात गुरुजी मुँह से कहते हैं वो पूरी होती है।** मुझे तो पूरा विश्वास है स्वामिजी से-गुरुजी से और काकाजी से कि– जो इन्होंने बताया, वो अवश्य पूरा होगा-देर बाद पूरा हो जाएगा-थोड़े समय बाद पूरा हो जाएगा। ऐसे महापुरूष बहुत मिलने मुश्किल हैं। मैं तो यही प्रार्थना करता हूँ कि सच्चे बादशाह हमारे गुरुजी की लंबी आयु करो। इनसे प्रेरणा लेकर हम अपने बच्चों की जिंदगी बना सकें, इतनी विनती करते हुए गुरुजी के चरणों में वंदना करता हूँ। गुरुजी महाराज की जय।

प.भ. कालिया साहेब

...मैं अमृतसर से आया हूँ। अमृतसर के अंदर श्री दुर्गियाना मंदिर है, उसका मैं चेयरमेन हूँ। सामाजिक कार्यों में रूचि है, देश के महान संतों के साथ रहने का अवसर भी प्राप्त हुआ है। पूज्य काकाजी के साथ मेरा बहुत ही निकट का संबंध रहा है। अमृतसर में घर के अंदर पूज्य काकाजी तीन-चार बार आए। जब अमेरिका से आए थे, उस समय भी मुझे उनका पत्र आया कि हमारे साथ डेढ़ सौ के करीब संत हैं, अमृतसर आना है। ऐसे निकट में उनके साथ रहने का जो मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ, मैं अपने आप को भाग्यशाली मानता हूँ और आज उनकी स्वर्णजंयती मनाने के अवसर में यहां जो आने का अवसर मिला है, मैं धन्य हो गया हूँ।

जो बात मैं आपके सामने रखने वाला हूँ कि ऐसे ही किसी के बारे में, उनकी विशेषता के बारे में कह दूँ, वह मेरे लिए बड़ा मुश्किल है – जैसे पंजाबी में कहते हैं 'हाथ पर सरसों जमाना।' कई बार लोग कहते हैं कि भई चमत्कार दिखाओ। अब मिर्च की कड़वाहट जो है, वो कोई दिखा तो सकता नहीं, हवा कोई दिखा तो सकता नहीं। ऐसे गुणों की तो अनुभूति ही होती है।

काकाजी जब पहली बार घर के अंदर आए, तो मुझे मेसेज मिला कि घर में ऐसे संत आए हैं। मुझे उनके बारे पहले कोई जानकारी भी नहीं थी। मैं घर में गया, उनके साथ और दस-बारह भक्तजन थे, तो वो स्वामिजी-काकाजी कुछ बात कह रहे थे। काकाजी के दिमाग में एक बात आ गई कि मैं जो कह रहा हूँ, वह कालिया की समझ में नहीं आ रहा है और वाकई मैं मानता भी नहीं था।

मेरी एक बहन बीमार थी, तो मेरे माताजी कहने लगे– स्वामिजी आप आए हैं, इनको ठीक कर दो। वो कहते हैं मैं इसकी दवा करूंगा। तो मेरी माता कहने लगीं कि कल को इसकी शादी करनी है। अगर ठीक ना हो तो, किसी के घर में जाएगी–काला क्लेश होगा। ठीक करो या इसको उठा लो। पूज्य काकाजी कहने लगे कि ठीक है। फिर कहा कि एक कटोरी में **पानी** लाओ और पानी के अंदर उन्होंने पैंतालिस बार फूंक डाली; कहने लगे कि यह दवाई बन गई है। **इसको तिरतालिस दिन एक चम्मच रोज पिलाओ। अगर ये ठीक हो गई तो ठीक है, वर्ना पैंतालिसवें दिन मैं इसको अपने मंदिर में बुला कर नई योनि में भेज देता हूँ।** मैंने कहा कि मैंने भी बहुत इधर-उधर जाकर देखा है, बड़ा घूमा हूँ, बड़े-बड़े संतों के साथ रहने का अवसर मिला है। ये बात कुछ ठीक नहीं है। लेकिन लेडिज़ के अंदर–माताओं के अंदर श्रद्धा होती है, आदमियों के अंदर कुछ कम होती है। **आप इमेज़िन करो**

कि मेरी बहन की पैंतालिसवें दिन मृत्यु हो गई ! इस बात का पूज्य गुरुजी को भी पता है। **टेररिजम के अंदर** मेरी चार फैक्ट्रियों को उग्रवादियों ने आग लगा दी। उस समय भी मेसेज़ आया कि चिंता ना करना। फैक्टरी को तो आग लगी, लेकिन **मुझे और मेसेज़ मिला कि आपका जहां माल है वहां पूज्य काकाजी का चित्र रखवा दो – कुछ नहीं होगा।** आप इमेज़िन करो कि **आतंकवादियों ने कितना हल्ला-गुल्ला किया, कितनी आग लगाई... सब कुछ हो गया लेकिन मेरे गोदाम का एक किलो भी माल जला नहीं। मेरे ऊपर चार बार गोली चली, पूज्य काकाजी ने कहा कि चिंता मत करना, आप को कोई गोली नहीं लगेगी** और उनके आशीर्वाद से जो मेरे ऊपर अटैक करने आए थे, वो तो खतम हो गए लेकिन **मेरा कुछ नहीं बिगड़ा। ये काकाजी का आशीर्वाद था।**

एक बार रेलवे की स्ट्राईक थी और पूज्य काकाजी अमृतसर आए थे। हमारे बी.जे.पी. के एक ऑल-इंडिया वाईस प्रेसीडेन्ट डॉ. बलदेवप्रकाशजी जो कि राज्य सभा के मेम्बर थे, वो सब अमृतसर के अंदर कहने लगे कि काकाजी से मिलवाओ हमें–किसी भी तरह काकाजी को यहां घर ले आओ। मैंने काकाजी को कहा तो काकाजी कहते हैं कि चलो वहां चलते हैं। पर, मैंने कहा काकाजी फ्लाईट चलने वाली है, समय नहीं है। आपका तो नंबर भी नहीं आया है, 124वां नंबर है वेटिंग लिस्ट के अंदर। फिर भी पूज्य काकाजी कहने लगे कि कोई बात नहीं आप वहां चलो। फिर मुझे कहने लगे कि आप इनके नाम का रोज़ जाप करना, इनका कुछ नहीं बिगड़ेगा–कोई बोम्ब-कोई गोली कुछ नहीं बिगाड़ सकेगी। इमेजिन करो–वो गोली से तो नहीं मरे, जब उनकी आयु हो गई, उन्होंने अपना जीवन दे दिया। वहां हम जब ऍयरपोर्ट पर गए तो सभी लोग वहां खड़े थे। वे बोले–गुरुजी आप आइए– वेटिंग नंबर भी खत्म हो गया था ! आखिर में मैं एक ही बात कहूँगा– **विश्वास और श्रद्धा की यह बात है। पर, अगर नल की टूटी खोल दो और बर्तन का जो रुख है वो उल्टा घुमा दो तो नल खोलने पर पानी तो गिलास के अंदर जाएगा नहीं। काकाजी के बाद मेरा जो यहां का संबंध था, मन नहीं मानता था कि काकाजी के बाद कैसे मंदिर में जाऊं ? लेकिन आज जो प्रेम प.पू. गुरुजी से मिला है,** इनकी दीर्घायु की कामना करता हूँ, इनका सदैव हमें आशीर्वाद मिलता ही रहे और सदैव मिल रहा है। **इन्होंने जो अपनत्व दिया है और प.पू. काकाजी का साक्षात्कार जो है अब गुरुजी के अंदर देख रहा हूँ।** बहुत-बहुत धन्यवाद !

श्री रोमेश भंडारीजी

... मुझे बहुत प्रसन्नता होती है कि आज मैं आप सबके साथ यहां उपस्थित हूँ– पूज्य गुरुजी के जन्मदिवस पर उनको बधाई देने के लिए। जब मुझे निमंत्रण भेजा, तो उस समय मुझे कहना पड़ा कि मेरा एक और कार्यक्रम है, मुझे हरिद्वार जाना है 31 तारीख को, मुझे क्षमा करना पड़ेगा। बहुत पहले मैंने वो मान लिया था, लेकिन गुरुजी आपका प्रेम, आपका निमंत्रण, ऊपर वाले की आज्ञा– तो ऐसे हालात हुए कि जो मेरा कार्यक्रम 31 तारीख का था, वो पहले हो गया और मुझे मौका मिल गया कि मैं आपके पास आ जाऊं। हमें सभी को आशा है कि आपकी बहुत-बहुत-बहुत लंबी आयु होगी। आप जैसे महापुरुषों की आवश्यकता है क्योंकि आप प्रेम और स्नेह फैलाते हैं। आपका संदेश है शांति का-अमन का-भाईचारे का।

आज हम सभी को इतना दुःख होता है, जब सूचना मिलती है कि गुजरात में क्या हालात हो रहे हैं ? पड़ौसी एक-दूसरे को मार रहे हैं। इस किस्म की अहिंसा हो रही है कि बहुत ही दुःख होता है। आप जैसे व्यक्तियों की आवश्यकता है, ताकि आप उस माहौल को ठीक करें, शांति फैलाएं, लोगों को समझाएं कि हम सब एक ही बनाने वाले के बच्चे हैं, तो अंतर क्यों रखना ? एक-दूसरे के साथ वैर क्यों रखना ? **अगर मुठ-भेड़ होती है, अगर कई मुद्दे होते हैं कि जहां सहमति नहीं होती है; तो किसी दूसरे को मार कर वो मसला सुलझ नहीं जाता। बैठ कर-बातचीत के द्वारा बहुत कुछ चीज़ें हैं जो सुलझ जाती हैं।** लेकिन आप जैसे व्यक्तियों के आशीर्वाद की आवश्यकता होती है और इस अवसर में आपसे केवल यही प्रार्थना करना चाहूँगा कि गुरुजी आपके साथ **सब एक प्रयास करें– गुजरात में एक प्रयास करें ताकि वहां पर एक शांति स्थापित हो जाए। काफी हो गया है** और अगर आपके आशीर्वाद होंगे, **मुझे पूर्ण विश्वास है कि एक बार शांति फिर स्थापित हो जाएगी।** जय स्वामिनारायण !

प.भ. महेन्द्र कपूरजी

...किन शब्दों से गुरुजी का धन्यवाद करूं कि उन्होंने मुझे बुलाया यहां, याद किया और मुझे पता नहीं था कि आज गुरुजी का जन्मदिन है; यहां आकर पता चला। ऐसा सरल स्वभाव–मैं बयान नहीं कर सकता... ओ.पी. अग्रवालजी-भाईसाहब ने बात कराई और **गुरुजी ने कहा** कि भई महेन्द्र तुमको आना है, अपने बेटे को भी साथ में लेकर आना है। **ऐसे लगा कि जैसे कोई परम स्वामी आदेश दे रहे हैं, मेरे से ना**

१९५२-२००२
प्रथम प्रभु ने पत्र पाठ्यु. पप्पा
50
साक्षात्कार स्वर्णजयंती

नहीं हुई। खैर मैं क्या कहूँ ? मैं यही कह सकता हूँ कि **उनके चरणस्पर्श करके आज मुझे इतना ज्ञान मिला है कि भंडारी साहेब ने कहा है कि – 'अमन और शांति'– एक दिमाग में ऐसी अमन और शांति आ जाती है। मैं तो यही चाहता हूँ कि हमारे हिन्दुस्तान में ऐसे ही गुरु होने चाहिए**–जो हँसते रहें, हँस-हँस कर बात करें और हँसते-हँसते ही आशीर्वाद दे देते हैं। जो माँगो वही मिल जाता है, और क्या चाहिए ? गुरु जिसको मिल गए, उसको भगवान भी मिल गए। जय स्वामिनारायण !

प.भ. ओ.पी. अग्रवालजी

प्रगट ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज–जिनकी आज हम साक्षात्कार की स्वर्णजयंती तीन दिन से मना रहे हैं और प.पू. गुरुजी का जन्मदिन मनाने का भी हम सब को अहोभाग्य मिला है, किन शब्दों में धन्यवाद करें ? एक्च्युली तो हर समय हम उनका धन्यवाद ही करते रहें-धन्यवाद ही करते रहें-धन्यवाद ही करते रहें - जिन्होंने **हमको ऐसे सच्चे संत प.पू. गुरुजी से संबंध कराया।** आज हम सभी के जीवन में छोटे-छोटे, बड़े-बड़े प्रसंग बनते हैं, पर जब से हम सबको गुणातीत स्वरुपों का संबंध हुआ है, तो कितनी आसानी से सारी चीज़ें टल जाती हैं और कितना बल हमको मिलता है कि हम वो सब चीज़ को हँसते हुए उन सब से पार हो जाते हैं।

एक बार जब मैं यहां आया और देखा तो यहां साक्षात्कार स्वर्णजयंती की जो तैयारियाँ चल रही थी और इतना उत्साह था कि उनको सबको देख कर मन में ऐसा होता था कि मुझे भी कोई सेवा मिल जाए ... इतनी छोटी-सी बात जो कि मेरे लिए बहुत बड़ी बात थी और गुरुजी ने यहां बैठे-बैठे मेरी बात सुन कर मुझे बम्बई में महेन्द्र कपूर साहेब से कोन्टेक्ट करने के लिए एक सेवा का मौका दिया और उसमें मैं निमित्त बना। प.पू. गुरुजी की योजना क्या है और किस तरह से वो किससे क्या करवाना चाहते हैं, किस तरह की सेवा वो हम लोगों को दे देते हैं, पर उसके पीछे हम सब के कल्याण की योजना उनकी होती है। मैं श्री महेन्द्र कपूर साहेब का और उनके बेटे रोहन कपूर का बहुत-बहुत शुक्रगुज़ार हूँ और हम सब की तरफ से उनका आभार प्रगट करता हूँ कि उन्होंने यहां आकर प.पू. गुरुजी की जो चाह थी, ऐसा हम सबको ये मौका दिया कि उनके भजन का हम सब आनंद ले सकें। आप सभी को मालूम होगा कि महेन्द्र कपूर साहेब देशभक्ति के और ये भजन गाने के लिए खूब फेमस हैं और उन्होंने कितना बड़ा काम इस देश के लिए किया है।

यहां जब ये काम सब चल रहा था, आज जो आप सब देख रहे हैं; पर **ये उत्सुकता एक-एक बच्चे के अंदर, बड़े के अंदर, सबको जो उमंग है, उस सबके पीछे गुरुजी का एक अथक् परिश्रम काम कर रहा है।** ये बड़े अचंभे और अचरज की बातें हैं जो हमने पिछले दो दिनों में भी सुनी कि बीस दिन के अंदर ये स्वर्णजयंती द्वार बना है। नामुमकिन लगता है और वो सब **गुरुजी के अथक् परिश्रम, उनके द्वारा हमको जो गाईड लाईन-संस्कार जो मिले हैं, वो यहां सब झलक पड़ता है।**

जब ये स्टेज बनाने की बात चल रही थी और मैं यहां आया था, तब स्टेज बनाने के लिए हमको क्या करना चाहिए वो सब बच्चे सोच रहे थे ! तो उसके लिए पहले सब– **करीब पैंतीस-चालीस लड़कों** ने मिल करके पंडाल में यहां धून करी, जैसे काकाजी हर समय धून करवाते थे-गुरुजी हर समय हमको करवाते हैं। **वो सब ने एक विचार किया कि जो प्रभु की इच्छा होगी, वो हमको धून करने के बाद वो रास्ता मिल जाएगा।** ये कैसे संस्कार ? कैसी विचारधारा–आज के इस युवक लोगों की ! वर्ना आज संसार का जो माहौल है, उसमें से, हम सब जो परिवार गुरुजी के साथ जुड़े हैं, उन लोगों को **कितने अच्छे संस्कार मिले हैं कि बच्चे कोई काम करने से पहले प्रभु को याद करते हैं** ! मैं अपने आप में कई बार सोचता हूँ कि काश मैं भी इतना छोटा बच्चा होता तो मुझे भी इतनी जल्दी सत्संग मिलता ! **कीमत दिए बिना एक अनुपम और एक बहुमूल्य वस्तु हम लोगों को मुफ्त में मिली है। हमारे कोई पुराने भाग्य, कोई हमारे पुराने कर्मों की वजह से हम लोगों को प.पू. गुरुजी का ये संबंध मिला है।**

मैं एक छोटी-सी बात करना चाहूँगा। मुझसे कोई पूछता है कि आप गुरुजी से जुड़े हैं, क्या सत्संग है ? कैसी बातें हैं ये ? तो मैं कहता हूँ कि ये लिविंग सत्संग है और हम सबको जीतेजी अक्षरधाम का जो सुख भोगना है, वो हमको यहां पर गुरुजी के आसरे में मिल रहा है। **कोई भी–समय चौबीस घंटे–ही इज़ अवेलेबल फॉर इच एण्ड एनीवन। कोई भी, कभी भी फोन पर या आकर-कोई भी मिलने का समय नहीं, कभी भी** ! मैंने अपनी आँखों से देखा है गुरुजी को– **रात को दो बजे फोन आए तो उठ करके तैयार होकर भक्त की सेवा के लिए चल पड़ते हैं।**

मैं तो अपने आपको बहुत बड़ा भाग्यशाली मानता हूँ कि कैसे दर्शन वो हमको देते हैं। एक बार अभी बोम्बे से दिल्ली आना था। मैंने गुरुजी को फोन किया कि राजधानी से निकल कर मैं दिल्ली पहुँच रहा हूँ। तो उन्होंने कहा कि राजधानी तो पाँच बजे है, क्या अभी नहीं आ सकते ? मैंने बोला कि आप कहोगे तो जरूर आ सकता हूँ। उन्होंने कहा कि प्लेन से आ जाओ। उस समय ग्यारह बजे की फ्लाईट थी, उससे मैं आने निकला। वहां ऍयरपोर्ट पर जाकर देखता हूँ कि जो मेरे एक पुराने इन्डस्ट्रियालिस्ट जो बोम्बे में ही थे, पाँच-छः

दिन तक मेरी मुलाकात नहीं हो पाई थी; वो ही फ्लाईट में वे सामने खड़े दिखाई दिए और उन्होंने मुझे अपनी साथ वाली सीट पर बिठा करके दो घंटे प्लेन में मेरे व्यावहारिक काम के लिए– बात करी। उन्होंने ये इसलिए किया यह मैं कहना नहीं चाहता हूँ। ये तो एक निमित्त था। पर, **दोपहर को– जो कि उनका आराम का टाईम होता है, तब वहां ऍयरपोर्ट पर मेरे जैसे तुच्छ - छोटे से सेवक को दर्शन देने के लिए वहां गुरुजी उपस्थित थे** ! ये कौन कर सकता है, ये किसकी ताकत है ? वो एक परम भागवत, संत जो पूर्ण समर्थ हैं वो ही ऐसे दर्शन दे सकते हैं...

आज गुरुजी का मैं देखता हूँ कि काकाजी के प्रति उनकी गुरुभक्ति वो किस तरह से अदा करते हैं। कल हम सबने यहां देखा कि वशीभाई होली वाले दिन नहीं थे, **वशीभाई के साथ सदाबहार प्रेम जो उनका है– कैसे यहां स्टेज पर सबके सामने उन्होंने चंदन की होली से उनको रंग दिया ! उनका ये सब प्रेम देख कर आँखों में पानी आ जाता है।** हे काकाजी ! हे स्वामिनारायण भगवान ! गुणातीत स्वरूपों ! आप सब हम को जो ये गुरुजी मिले हैं, आज उनके जन्मदिन पर मेरी सबके चरणों में प्रार्थना है कि हम उनके संबंध का हर पल आनंद लेते रहें।

प.भ. मल्कानी अंकल

......आज गुरुजी महाराज का 65वां प्रागट्य दिवस है, तब यह सोचता हूँ कि 65वां है या 265वां है ? तो **पहले-पहले मैं सबसे तीन बार रिक्वेस्ट करूंगा– गुरुजी महाराज की जय हो ! गुरुजी महाराज की जय, गुरुजी महाराज की जय** ! आज ऐसा एक शुभ दिन है जो महसूस होता है– हर एक डायमेन्शन में कि काकाजी महाराज, पप्पाजी महाराज, स्वामिजी महाराज, दिनकरभाईजी, प.पू. निर्मलस्वामी, प.पू. कोठरीस्वामी, प.पू. दासस्वामी सब गुणातीत स्वरूप यहीं हैं, महाराज भी यहीं हैं और हम लोग मिल कर तीन दिन से ये सेलीब्रेशन में प्रभु का गुणगान कर रहे हैं। मैं गुरुजी को बहुत-बहुत थेंक्स कहने के लिए दोबारा ये मौका लूंगा। वो फॉरमेलिटी वाली थेंक्स नहीं, ए रियल-सिन्सियर दिल से कि **गुरुजी ने हमें स्वरूपों का दर्शन करवाया, स्वरूपों की पहचान करवाई। गुरुजी ने अपना बहुत टाईम लगाया, हमें समझाने में कि गुणातीत स्वरूप क्या है ?** पंद्रह-सोलह साल से जब से गुरुजी मिले हैं हम लगातार देखते आ रहे हैं। **यहां सत्संग में भी बहुत-बहुत प्रोग्रेस हुई है, सिर्फ गिनती में नहीं-अंतर से इतनी प्रोग्रेस हुई है।**

बचपन से मेरे को मन में एक था– रहता था कि कोई मैजिक देखूं, कोई ऐसा चमत्कार देखूं और मैं अंतर से कहता हूँ कि जितना स्वामिनारायण मूवमेन्ट है, चाहे मंदिर कोई-सा भी हो, दिल्ली का हो-हरिधाम हो-ताड़देव हो-विद्यानगर हो-मिशन हो, वहां एक मैजिक ही चल रहा है और वो मैजिक क्या है ? तो वो स्वामिनारायण के संत, गुणातीत स्वरूप और स्वामिनारायण मंत्र। मैं अभी नज़दीक में हरिधाम गया था, चार-पाँच दिन वहां था। बहुत-बहुत सुंदर सेलिब्रेशन था। वहां स्वामिजी ने किताब दी और उसके एक-दो पेज मैंने पढ़े। स्वामिजी ने जो जप का मतलब समझाया है – 'ज' जन्म-मरण से दूर और 'प' पाप से दूर। ऐसा मंत्र कहां मिल सकता है ? और वो भी गुरु के साथ, गुरु के ध्यान के साथ और मैं ये मानता हूँ कि ये सिर्फ कहने की बात नहीं है। **ये स्वामिनारायण मंत्र जो है, वो लिविंग मंत्र है।** ये मैं अपनी कन्विकशन-अपने अनुभव से कह सकता हूँ ; क्योंकि मैं जानता हूँ कि **इट इज़ धी मोस्ट पॉवरफुल मंत्र एण्ड इट वर्क्स मैजिक**–जिसको हम ढूंढ रहे थे।

कई बार मेरे साथ ऐसा होता है कि कोई फोर्म फिलअप करना होता है, तो वहां पूछा होता है कि वॉट इज़ योर रिलिज्यन ? आपका धर्म क्या है ? तो मुझे ऐसा लगता है कि मैं लिखूं वहां–'स्वामिनारायण - हिन्दू' ! हिन्दू तो लिखते ही हैं, पर मैंने कहा– 'स्वामिनारायण हिन्दु'– में लिखूं। गुरुजी को मैं एक और थेंक्स दूंगा कि उन्होंने मुझे इसी लाईफ में एक सच्चा गुरु दिलवा दिया। **आज मैं मानता हूँ कि मैं कहीं भी जाऊं तो मैं कभी भी अकेलापन महसूस नहीं करता, क्योंकि मुझे ये फीलिंग है अंतर से कि मेरा स्वामिनारायण भगवान, मेरा स्वामिनारायण का गुरु हमेशा मेरे साथ है।** मैंने एक जगह पढ़ा था कि एक ज़हाज़ पर कैप्टन ऊपर चढ़ा, फिर सेलर भी ऊपर चढ़े, तो वो रस्सी छुड़वा रहे थे ताकि ज़हाज़ समुद्र में जाए-पुराने समय की बात है। कैप्टन ने सभी सेलर को इकट्ठा करके पूछा कि आर यू ऑल हियर ? तो उन्होंने कहा– यस् कैप्टन। डू यू ऑल बिलीव इन गॉड ? सबने कहा– यस् कैप्टन। तो दूसरा सवाल पूछा कैप्टन ने कि डू यू हैव एनी फियर ? धे सेइड–नो ! तो हम लोग जो इधर इकट्ठे हैं, सब अंतर से स्वामिनारायण भगवान में मानते हैं। तो **वी हॅव नो फियर। हमें गुरु हैं।** सबके अपने-अपने गुरु हैं। **सब स्वामिनारायण के फोलोअर्स हैं। काकाजी ने मंत्र दिया है, मंत्र जाप करें और फ्री हो जाएं।** गुरुजी को फिर बहुत-बहुत धन्यवाद, थेंक यू। स्वामिजी यहां आए हैं, मैं उनको कैसे एक्सप्रेस करूं कि कितना उन्होंने हमें सुखी किया है। पर्सनली उनको कभी बोलूंगा कि थेंक यू। दिनकरभाई को बहुत-बहुत थेंक्स कि इतनी दूर से आए हैं। मेरे ख्याल से इस साल तीन बार तो आए हैं–दर्शन देने...

गुरुजी, वन्स अगेईन थेंक यू, हॉउ ओल्ड आर यू ? 65 और 265 ? गॉड ब्लेस यू, काकाजी ब्लेस यू विथ ए लॉंग-लॉंग लाईफ। थेंक यू एण्ड जय स्वामिनारायण !

प.पू. स्वामिजी

भगवान स्वामिनारायण ने वचनामृत में लिखा है-कहा है– **जहां गुणातीत संत की उपस्थिति है, वहां अक्षरधाम का दर्शन सहज-सुलभ बनता है।** आज जब कालिया साहेब की ये बात मैंने सुनी, उसके मुँह से जो निष्ठा का खमीर निकलता था, काकाजी और गुरुजी के प्रति लगाव व प्रीति का जो दर्शन होता था, वो दर्शन करके मुझे खूब आनंद आ गया। **एक निष्ठावान समाज का सर्जन गुरुजी ने अद्‌भुत किया है।** फिर मैं यहां से काढ़ा पीने के लिए गया। उसी वक्त अग्रवालजी का प्रवचन वहां बैठ कर मैं सुनता था। उसने जो गरबा गाए हुए लड़कों का जो अद्‌भुत वर्णन किया–युवकों में भक्ति का गौरव दिखाई पड़ता था। कलियुग में जो सतयुग का दर्शन जो युवकों के दिल पर होता है वह उसने बहुत अद्‌भुत बात बतलाई। **युवा समाज में ऐसी जो भक्ति की दिलचस्पी प्रगट हो जाना, निर्दोषता प्रगट हो जाना–वो ही प्रताप है।** सही अर्थ में सच्चा प्रेम प्रगट हो जाना, **वो भगवतस्वरूप ऐसे गुरुजी का उन सब के प्रति दिव्य दृष्टि का सेवन है।** मुझे यह बहुत आनंद हुआ। फिर महेन्द्र कपूर ने शुरू किया; **सारा वातावरण इतना भक्तिमय बन गया। रोम-रोम में, आप सब के हृदय और रोम-रोम में गुरुजी की ओर खूब प्रीति का दर्शन किया। सच्चे-सच्चे अर्थ में संबंध का दर्शन किया !** आप सब की उमंग देख कर, आप सब की भक्ति देख कर, आप सब की तरवराहट देख कर, आप सभी का सच्चिदानंद का आनंद देख कर **मुझे ऐसा महसूस हो गया कि गुरुजी के सान्निध्य में आज अक्षरधाम की सभा यहीं है।** महेन्द्र कपूरजी की भक्ति का दर्शन भी पहली बार किया। उसकी बात तो पहले सुनी थी। राष्ट्रभक्ति के गीत मैंने बहुत सुने हैं। वही मेरा स्वधर्म था, बहुत छोटा था-उसी वक्त से ! मगर आज जो दिल से उसने गाया, बहुत ही गाया है उसने ! देश की भक्ति बहुत करी है। **आज भगवान स्वामिनारायण, गुणातीत पुरुषों, काकाजी, पप्पाजी, दिनकरभाई, गुरुजी सबकी उसने एक अद्‌भुत सेवा करी है। अद्‌भुत प्रीति का दर्शन करवाया है।** वो पूर्व का अक्षरधाम का मुक्त होगा ! वर्ना तो ऐसी प्रीति का दर्शन होता नहीं है। **वो भी गुरुजी के संबंध से अक्षरधाम रूप हो गए ! ये सारी सभा भी अक्षरधाम रूप हो गई !** आप सब का दर्शन होकर मुझे बहुत आनंद हुआ ! आज भगवान स्वामिनारायण, गुणातीतानंदस्वामिजी, भगतजी महाराज, जागास्वामी, शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज, काकाजी, पप्पाजी, साहेब, स्वामिजी, महंतस्वामिजी, प्रमुखस्वामिजी महाराज, गुरुजी, दिनकरभाई सब के चरणार्विंद में एक ही प्रार्थना– **ऐसा आनंद, सच्चिदानंद का आनंद, दर्शन का जो आनंद, संबंध का जो आनंद हम सब ने जो अनुभव किया, वो आनंद प्रभु और गुणातीत पुरुषों आपके जीवन में कायम स्थिर बनाने के लिए आशीर्वाद दें ऐसी प्रार्थना !**

✡✡✡

हमारे राष्ट्रपति माननीय डॉ. अब्दुल कलाम...प.पू. स्वामिजी की नज़र से !

[हमारे राष्ट्रपति माननीय डॉ. अब्दुल कलाम के राष्ट्रपति बनने से पहले साक्षात्कार स्वर्णजयंती की तीन दिन की शिविर में दिनाँक 30 मार्च, 2002 को (सायं की सभा में) प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी ने उनकी विशेषताएं दर्शाते हुए निम्न आशीर्वचन कहे थे–]

भारत की धरती पर जिसने एटेमिक एनर्जी में बहुत विकास किया, भारत को मिसाईल्स और रॉकेट का प्रदान किया,
ऐसा एक सायन्टिस्ट अब्दुल कलाम ! **ये व्यक्ति मुझे बहुत जँचती है।** क्यों ? मैं आपको थोड़ा समझाता हूँ।
रामेश्वरम्–ज्योतिर्लिंग की वो धरती, कलाम का वहां जन्म।
उसका पिता चुस्त मुस्लिम, वो मस्जिद में नमाज़ पढ़ने के लिए जाता था।
अब्दुल कलाम का मित्र हिन्दु; वो शिवलिंग-रामेश्वरम् में प्रदक्षिणा करने के लिए - दर्शन करने के लिए जाता था।
वो छोटा-सा लड़का था, मगर जीवन के दो ध्येय थे सिर्फ !
एक– प्रभु भजन करना-प्रार्थना करना, नमाज़ पढ़ना।
दूसरा, अभ्यास करना–अच्छी तरह से।
जब रामेश्वरम् की धरती पर वो मंदिर में जब प्रदक्षिणा कर रहा था,
वो लिंग में से फूटा हुआ डिवाईन रेईज़,
वो लिंग में से - महादेवजी के लिंग में से बाहर आती हुई ज्योति का
वहां प्रदक्षिणा करते-करते उसने अनुभव किया।
उसका लाईफ में उसने लिखा है कि प्रदक्षिणा और भजन ये सायन्टिफिक है।
दुनिया के किसी भी व्यक्ति को प्रदक्षिणा की महिमा मैं साईन्टिफिकली समझा सकता हूँ।

नहीं कोई संत की प्राप्ति, नहीं ऐसी कोई उपासना !
मगर कलाम को उसकी शुद्ध नीति से, श्रद्धा से किए भजन के फलस्वरूप प्रभु ने एक अनुभव करवाया।
दूसरी बात उसकी कहता हूँ मैं। भारत की धरती पर राजस्थान से - पोखरन में से ऐटेमिक धड़ाका हुआ।
दो महिने के बाद उसका जो एसिसटेन्ट सेक्रेटरी– वो ऑन धी पॉईन्ट ऑफ डेथ होस्पीटल में था।
मेरी बात अच्छी तरह सुनना कि–
नहीं उपासना, नहीं जपयज्ञ, नहीं संत का योग–
मगर श्रद्धा क्या-क्या काम करती है, शुद्ध भावना क्या काम करती है !
तो, जब एसिस्टन्ट सायन्टिस्ट तिवारी को मिलने के लिए गया–शाम को।
उसी वक्त ऑन धी पॉईन्ट ऑफ डेथ वो मृत्यु की राह देख रहा था।
कलाम ने कहा आपको जीने का है, चिंता मत करना।
मैं रात्रि को भजन करूंगा, वो तो उदास हो गया था कि मैं जीने वाला ही नहीं हूँ।
फिर कलाम ने कहा कि चिंता मत करना, मैं प्रार्थना रात्रि को करने वाला हूँ।
सुबह मैं आपका दर्शन करने के लिए आ जाऊंगा। मगर उदासी छोड़ो; वो निकल गया।
तीन-चार घंटा उसके लिए - अपने मित्र के लिए - अपने एसिस्टन्ट सायन्टिस्ट के लिए
फ्रोम धी वेरी बोटम ऑफ धी हार्ट उसने प्रार्थना किया।
वो सुबह में पहुँचा, अपने वो सायन्टिस्ट को बैठा देख कर उसे बहुत खुशी हो गई।
उसको संतोष हो गया कि मेरी प्रार्थना प्रभु ने सुनी।
ये दो बात का अनुभव तो सब दुनिया करती है; मगर उसमें एक गुण बहुत अच्छा है।
अच्छी तरह सुनना कि–
अद्‌भुत काम ये धरती पर उसने किया, मगर उसकी बायोग्राफी में अहंकार की लेश नहीं आई है।
वो हर रोज़ एक ही बात करते रहते थे,
'जो करवाया वो प्रभु ने करवाया– मैं तो निमित्त, मैंने कुछ नहीं किया है। इन्सपीरेशन वो देता था।
मैंने क्या किया, मेरे को मालूम नहीं है।
मैं शांति से सो जाता हूँ, प्रभु प्रेरणा करते हैं और सुबह मैं भजन करता हूँ और प्रेरणा देते हैं और पकड़ता हूँ।'
ये उसकी बात मेरे को बहुत जँची।
अब्दुल कलाम की ये बात– मैंने कहा है, ये व्यक्ति मेरे को बहुत जँचती है।
क्यों ? कि बेंग्लोर की धरती पर जब अब्दुल कलाम को कुछ प्रश्न पूछा–
आपके पास ऐसी कौन-सी थियेरी है, जिसके फलस्वरूप आपका रिज़ल्ट बहुत अच्छा आया ?
एक ही थियेरी है– भजन !

(ध्वनिमुद्रण से संकलित आशीवर्चन एवं प्रवचन)

✡✡✡

ताड़देव की गतिविधियाँ

3 फरवरी 1952 के महामंगलकारी दिन गुरुहरि योगीजी महाराज ने प.पू. काकाजी को साक्षात्कार कराया। अफ्रीका में प.पू. पप्पाजी के पास घूमती-घूमती बातें ऐसी पहुँची कि आपकेछोटे भाई (प.पू. काकाजी) तो पागल हो गए हैं। कोई अलग ही भूमिका में बेफाम वर्तते हैं वगैरह... प.पू. पप्पाजी सारी बात की सच्चाई जानने के लिए 'भारत' आए। प.पू. काकाजी की सारी गतिविधियाँ देखीं और गुरुहरि योगीजी महाराज से अपने भीतर में उठते सारे विचारों के द्वंद्व की बात करी। गुरुहरि योगीजी महाराज आर्षदृष्टा पुरुष थे... प.पू. पप्पाजी को आश्वासन देकर निश्चिंत किया क्योंकि अक्षरधाम से साथ में लाए इन दोनों भाईयों द्वारा उन्हें अनेक चैतन्यों की कल्याणयोजना का सूत्रधार जो बनाना था।

पहली जून 1952 को प.पू. पप्पाजी को भी गुरुहरि योगीजी महाराज की कृपा से दिव्य प्रतीति हुई और उस दिन से 'बाबुभाई' ने स्वयं को संपूर्ण मिटा कर 'मैं योगी का प्रकाश' मान कर योगी के संबंध वाले का दास बन कर जीने का दृढ़ संकल्प कर लिया और आज पूरे गुणातीत समाज के प्यारे 'पप्पाजी' के रूप में संतों, बहनों, युवकों, गृहस्थों के प्राणाधार बन कर हमारे समक्ष विराजमान हैं।

इस वर्ष 1952 से 2002– यानि 50 वर्ष पूरे हुए। 'गुणातीत ज्योत' की बहनों ने भक्ति अदा करने उत्सव

का नाम **'पप्पाजी स्वरूप दर्शन स्वर्णपर्व'** रखा और पूरे गुणातीत समाज ने 22 दिसंबर को सभी गुणातीत स्वरूपों की सेरेछाया में विद्यानगर में मनाया।

प.पू. गुरुजी प.पू. पप्पाजी के दर्शन की भावना से उत्सव में जाने दिल्ली से 20 दिसंबर की राजधानी ट्रेन से निकले। 21 की सुबह अमदावाद पहुँचे... अमदावाद के हरिभक्तों को मिलने के बाद दोपहर के बाद विद्यानगर जाने के लिए निकले... विद्यानगर पहुँच कर प.पू. पप्पाजी के दर्शन किए... प्रभुकृपा में प.पू. पप्पाजी के साथ ही रात्रि का प्रसाद लेकर 'ब्रह्मज्योति' पर प.पू. साहेब के पास रात को रुके... सुबह 'पप्पाजी फार्म' पर 'प.पू. पप्पाजी स्वरूप दर्शन स्वर्णपर्व' महोत्सव की सभा में पधारे। स्वागत, स्टेज की डेकोरेशन, पंडाल में व्यवस्था वगैरह गुणातीत ज्योत की बहनों और निष्ठा वाले मुक्तों के अजोड़ समर्पण, सेवा, भक्तिपूर्ण हृदय की भावनाओं एवं प.पू. पप्पाजी को राजी कर लेने की एकमात्र तमन्ना का सशक्त परिचय-प्रमाण दे रहा था। कोटि-कोटि वंदन प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी की युगल जोड़ी को जिन्होंने सात वर्ष की आयु में ही धरती पर स्वर्ग लाने का संकल्प किया और आज बहनों को एकांतिक धर्म सिद्ध करा के कलियुग में आध्यात्मिक स्वर्ण युग स्थापित किया...

व्रतोत्सवसूची

(1)	दि.	18.1.2003,	शनिवार	– पोषी पूर्णिमा, मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी की दीक्षा तिथि
(2)	दि.	23.1.2003,	गुरुवार	– गुरुहरि प.पू. योगीजी महाराज का स्वधामगमन दिन
(3)	दि.	28.1.2003,	मंगलवार	– एकादशी, व्रत – गुरुहरि प.पू. योगीजी महाराज की स्वधामगमन तिथि
(4)	दि.	3.2.2003,	सोमवार	– ब्र.स्व.प. पू. काकाजी महाराज का साक्षात्कार दिन एवं अशोकविहार (ताड़देव) स्वामिनारायण मंदिर का पाटोत्सव **पवई-मुंबई के 'अक्षरधाम' नवनिर्मित मंदिर में मूर्तिप्रतिष्ठा**
(5)	दि.	6.2.2003,	गुरुवार	– वसंतपंचमी, शिक्षापत्री जयंती, ब्रह्मस्वरूप स्वामिश्री प.पू. शास्त्रीजी महाराज का प्रागट्य दिन
(6)	दि.	13.2.2003,	गुरुवार	– एकादशी, व्रत
(7)	दि.	15.2.2003,	शनिवार	– प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी की जन्मजयंती
(8)	दि.	27.2.2003,	गुरुवार	– एकादशी, व्रत
(9)	दि.	1.3.2003,	शनिवार	– महाशिवरात्रि, व्रत
(10)	दि.	4.3.2003,	मंगलवार	– प.पू. गुरुजी की प्रागट्य तिथि
(11)	दि.	7.3.2003,	शुक्रवार	– ब्रह्मस्वरूप प.पू. काकाजी महाराज का स्वधामगमन दिन
(12)	दि.	13.3.2003,	गुरुवार	– प. पू. गुरुजी का प्रागट्य दिन **(30 मार्च, रविवार को ताड़देव-दिल्ली में मनाया जाएगा।)**
(13)	दि.	14.3.2003,	शुक्रवार	– एकादशी, व्रत

R.N.I. 28971/ 77

Air Mail
'**Bhagwatkripa**' Bimonthly Magazine
Despatched on 15th of alternate months from January
If undelivered please return to :—
Printer, Publisher, Editor :—
SHRI PRABHAKER RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI
'*Taad-dev*', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg,
Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 2722 9327, 2724 9327
Type Setting : **SHAYOKA Type Setting**
Rama Vihar, Delhi-110081 Phone: 2595 0443
Printed at : **Delux Offset Printers**
308/4, Shahzadabagh, Opp. Rohtak Road,
Daya Basti, Delhi

TO,